فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَ كَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝٣٢
وَ الَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَ صَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝٣٣ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا
الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٤ۚۖ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَ يَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٣٥

आयत नं० 32 से 35

**सो** (अब बताओ) **उस आदमी से ज़्यादा बेइन्साफ़** (और नाहक़ बात कहने वाला) **कौन होगा जो अल्लाह पर झूट बान्धे** (यानी अल्लाह तआ़ला के बारे में यह कहे कि उसके साथ दूसरे भी साझी हैं) **और सच्ची बात** (यानी कुरआन) **को झुटला दे जबकि वो उसके पास** (पैग़म्बर के वास्ते से) **पहुंची,** (तो) **क्या** (क़ियामत के दिन) **जहन्नम में ऐसे काफ़िरों का ठिकाना न होगा** (यह फ़ैसला तो झूटों का हुआ)(32) **और** (इसके उलट) **जो लोग सच्ची बात लेकर** (अल्लाह की तरफ़ से या पैग़म्बर की तरफ़ से लोगों के पास) **आए और** (ख़ुद भी) **उस को सच जाना तो ये लोग परहेज़गार हैं**(33) (उन का फ़ैसला यह होगा कि) **वो जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उनके रब के पास सब कुछ है, यह बदला है नेक लोगों का**(34) (और यह बदला उनके लिए इसलिए रक्खा गया) **ताकि अल्लाह तआ़ला उन से बुरे कामों को दूर करे और नेक कामों के बदले उन का सवाब दे**(35)।

**नोटः-** यहां सच्ची बात से मुराद वो तालीमात हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए हैं चाहे वो कुरआन हो या कुरआन के सिवा दूसरी तालीमात हदीसें । और उन सच्चे लोगों में सब मोमिन दाख़िल हैं जो इसकी तस्दीक़ करने वाले हैं।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَ يُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٣٦ۚ وَ مَنْ يَّهْدِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝٣٧ وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ
هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝٣٨ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣٩ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٤٠ اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَ مَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٤١ع

आयत नं० 36 से 41

**क्या अल्लाह तआ़ला अपने** (ख़ास) **बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त) **के लिए काफ़ी नहीं** (यानी वो तो सब ही की हिफ़ाज़त के लिए काफ़ी हैं तो अपने प्यारे ख़ास बन्दे के लिए क्यों काफ़ी न होगा), **और ये लोग आप को उन** (झूटे माबूदों) **से डराते हैं जो अल्लाह के सिवा** (बना रक्खे) **हैं** (हालांकि वो ख़ुद बेजान लाचार हैं और कुछ क़ुदरत भी रखते तो अल्लाह की हिफ़ाज़त के मुक़ाबिले में मजबूर ही होते), **और** (असल बात यह है कि) **जिस को अल्लाह गुमराह करे उसका कोई राह पर लाने वाला नहीं(36) और जिस को अल्लाह सीधी राह पर ले आए उसको कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह तआ़ला** (उनके नज़दीक) **ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **बदला लेने** (पर क़ुदरत रखने) **वाला नहीं है(37) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है तो ये ही कहेंगे कि अल्लाह ने,** (इसलिए) **आप** (उनसे) **कहिए कि भला** (जब तुम अल्लाह को पैदा करने में अकेला मानते हो तो) **यह बताओ कि अल्लाह के सिवा जिन माबूदों को पूजते हो अगर अल्लाह मुझ को कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे क्या ये माबूद उसकी दी हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या अल्लाह मुझ पर अपनी महरबानी करना चाहे तो क्या ये माबूद उसकी महरबानी को रोक सकते हैं, आप कह दीजिए कि** (इससे साबित हो गया कि) **मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं** (इसीलिए मैं भी उसी पर भरोसा रखता हूं और तुम्हारी मुख़ालफ़त की कोई परवाह नहीं करता)(38) **आप** (उनसे) **कह दीजिए कि ऐ क़ौम के लोगों** (अगर इस पर भी तुम नहीं मानते तो तुम जानो) **तुम अपने तरीक़े पर चलते रहो मैं भी** (अपने तरीक़े पर) **चल रहा हूं** (यानी जब तुम अपने ग़लत तरीक़े को नहीं छोड़ते तो मैं सही तरीक़े को कैसे छोड़ दूं) **तो अब जल्दी ही तुम को पता चल जाएगा(39) कि वो कौन आदमी है जिस पर** (दुनिया में) **ऐसा अज़ाब आता है जो उसको रूसवा कर देगा और** (मरने के बाद) **उस पर सदा का अज़ाब उतरेगा** (जैसा कि जंगे बद्र में उनको मुसलमानों के हाथों से सज़ा मिली उसके बाद आख़रत का सदा का अज़ाब है)**(40) हम ने यह किताब आप पर लोगों के** (नफ़े के) **लिए सच्चे दीन के साथ उतारी है, सो** (आप का काम इसका पहुंचा देना है फिर) **जो आदमी सही रास्ते पर आएगा तो अपने नफ़े के लिए और जो आदमी गुमराह रहेगा तो उसका गुमराह रहना उसी पर पड़ेगा और आप उन पर** (इस तरह) **ज़िम्मेदार नहीं बनाए गये** (कि उनकी गुमराही की आप से पूछताछ हो तो आप उनकी गुमराही से क्यों दुखी होते हैं)**(41)**।

**नोटः**- ऊपर आयत से मालूम हो गया कि जब किसी मुसलमान को किसी गुनाह का काम करने के लिए डराया जाए तो उसे याद कर लेना चाहिए कि उस की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह काफ़ी है।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَ يُرْسِلُ
الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَ
لَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ۝ وَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَ اِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا
هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝

आयत नं० 42 से 45

**अल्लाह ही खींच लेता है उन जानों को** (जिनकी मौत का वक़्त आ गया है) **उनकी मौत के वक़्त** (पूरी तरह कि ज़िन्दगी बिल्कुल ख़त्म हो जाए) **और उन जानों को भी जिन को मौत नहीं आई उनके सोने के वक़्त** (मगर यह पूरी तरह नहीं बल्कि एक हैसियत से ज़िन्दगी बाक़ी रहती है मगर समझ बूझ नहीं रहती और मौत की सूरत में न समझ बूझ रहती है और न ज़िन्दगी), **फिर उन जानों को तो** (बदन की तरफ़ लौटने से) **रोक लेता है जिन पर मौत का हुक्म दे चुका है और बाक़ी जानों को** (जो नींद की वजह से ठहराई गईं थी और अभी उनकी मौत का वक़्त नहीं आया) **एक तय वक़्त के लिए आज़ाद कर देता है** (कि फिर जाकर बदन में उसी तरह काम करने लगे), **इस बात में उन लोगों के लिए जो सोचने समझने वाले हैं** (अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और तौहीद की) **दलीलें हैं(42) हां क्या** (तौहीद की साफ़ दलीलें होते हुए) **उन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरों को** (माबूद) **बना रक्खा है जो** (उनकी) **सिफ़ारिश** (करेंगे जैसा कि मुशरिक लोग अपने बुतों के बारे में कहा करते थे कि ये अल्लाह के यहां हमारी सिफ़ारिश) **करेंगे, आप कह दीजिए कि चाहे ये** (तुम्हारे बनाए हुए) **कुछ भी क़ुदरत न रखते हों और कुछ भी इल्म न रखते हों** (क्या फिर भी तुम ये ही समझते चले जाओगे कि ये तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे)(43) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि सिफ़ारिश तो सारी अल्लाह के बस में है** (बिना उसकी इजाज़त के किसी फ़रिशते या इन्सान की मजाल नहीं कि किसी की सिफ़ारिश कर सके और अल्लाह तआ़ला की इजाज़त सिफ़ारिश के लिए दो शर्तों के साथ है एक तो सिफ़ारिश करने वाला अल्लाह के नज़दीक मक़बूल हो दूसरे जिसकी

सिफ़ारिश की जाए वो बख़्शिश के क़ाबिल हो तो शैतानों को तो सिफ़ारिश करने का हक़ नहीं और फ़रिशते या पैग़म्बर मुशरिक की सिफ़ारिश कर नहीं सकते, और अल्लाह तआ़ला की यह शान है कि) **सारे आसमानों व ज़मीन में उसी का राज है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे** (इसलिए सब को छोड़ कर उसी से डरो उसी की इबादत करो)(44) **और** (तौहीद की साफ़ दलीलें मालूम होने के बावजूद काफ़िरों व मुशरिकों का हाल यह है कि) **जब सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है** (कि वो बिना किसी की साझेदारी के सारी दुनिया की हर चीज़ और हर काम का मालिक है) **तो उन लोगों के दिलों में घुटन होती है जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र आता है** (चाहे सिर्फ़ उन्हीं का ज़िक्र हो या अल्लाह के ज़िक्र के साथ उन का भी ज़िक्र हो) **तो उसी वक़्त वो लोग ख़ुश हो जाते हैं**(45)

**नोटः-** हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि सोने के वक़्त इन्सान की रूह उसके बदन से निकल जाती है। मगर एक किरण रूह की बदन में रहती है जिससे वो ज़िन्दा रहता है और उसी से ख़्वाब देखता है और जागने के वक़्त आंख झपकने से भी कम वक़्त में वो रूह बदन में वापस आजाती है।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ لَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ بَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۸﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَاۤ اُوْتِيْتُهٗ
عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۹﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۵۰﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰۤؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ
وَ مَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۵۱﴾ اَوَ لَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾

आयत नं० 46 से 52

**आप** (उनकी मुख़ालफ़त से दुखी न होइये और अल्लाह से दुआ में यह) **कहिए कि या अल्लाह आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले छुपे और खुले के जानने वाले आप ही** (क़ियामत के दिन) **अपने बन्दों के बीच उन बातों में फ़ैसला कर देंगे जिन में वो आपस में झगड़ते थे** (यानी आप इन मुख़ालिफ़ों की फ़िक्र में न पड़िये बल्कि उन का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द कीजिए वो ख़ुद साफ़ फ़ैसला कर देंगे)(46) **और** (उस फ़ैसले के वक़्त यह हालत होगी कि) **अगर ज़ुल्म** (यानी शिर्क व कुफ़्र) **करने वालों के पास दुनिया भर की सारी चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ उतनी चीज़ें और भी हों तो वो लोग क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूट जाने के लिए** (बेझिजक) **उन को देने लगें** (भले ही ली न जाएं), **और अल्लाह की तरफ़ से उनको वो बात पेश आएगी जिसको उन्होंने सोचा भी न था** (क्योंकि एक तो आख़रत का इनकार करते थे फिर उसमें भी यह दावा करते थे कि वहां भी उनको इज़्ज़त व दौलत मिलेगी)(47) **और** (उस वक़्त) **उनको अपने सारे बुरे काम नज़र आजाएंगे और जिस** (अज़ाब) **की वो हंसी उड़ाया करते थे वो उनको आघेरेगा**(48) (वैसे तो मुशरिक अल्लाह के सिवा दूसरों के ज़िक्र से ख़ुश और सिर्फ़ अल्लाह के ज़िक्र से भागता है) **फिर जिस वक़्त** (उस मुशरिक) **आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो** (जिनके ज़िक्र से ख़ुश हुआ करता था उन सब को छोड़ कर सिर्फ़) **हम को पुकारता है** (जिससे पहले भागता था) **फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से कोई नेमत दे देते हैं तो** (उस तौहीद पर जिसका हक़ होना ख़ुद उसके इक़रार से साबित हो चुका था जमा नहीं रहता बल्कि यह) **कहता है कि यह तो मुझ को** (मेरे) **हुनर से मिली** (है और अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत में लग जाता) **है, बल्कि वो** (नेमत अल्लाह की दी हुई और उसकी तरफ़ से इन्सान का) **एक इम्तिहान है** (कि देखें इसके मिलने पर हम को भूल जाता है और कुफ़्र करता है या याद रखता है और शुक्र करता है और इसी आज़माने में कुछ नेमतों में कमाई और कोशिश का वास्ता भी रख दिया इससे और ज़्यादा आज़माया जाता है कि देखें इस पर नज़र करता है या असल पर) **लेकिन अक्सर लोग** (इस बात को) **समझते नहीं** (इसलिए इसको अपनी कोशिश का फल बताते हैं और शिर्क में पड़े रहते हैं)(49) **यह बात** (कुछ) **उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पहले हुए हैं** (जैसे नमरूद व फ़िरऔन और क़ारून कि अल्लाह की नेमतों को अपना हुनर समझते थे) **सो उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई** (और अज़ाब को रोक न सकी)(50) **फिर उनकी सभी बुराइयां उन पर आ पड़ीं** (और सज़ा पाई), **और** (इस ज़माने के लोग यह न सोचें कि जो कुछ होना था पहलों के साथ हो चुका

बल्कि) **इनमें भी जो ज़ालिम हैं उन पर उन की बुराइयां पड़ने वाली हैं और यह** (अल्लाह तआ़ला को) **हरा नहीं सकते** (जैसा कि जंगे बद्र में ख़ूब सज़ा हुई)(51) **क्या इन लोगों को यह मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह ही जिस को चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और वो ही** (जिसके लिए चाहता है) **कम भी कर देता है, इस** (ज़्यादा या कम देने) **में** (सोचने से) **ईमान वालों के लिए** (कि समझदार होते हैं इस बात पर) **निशानियां** (यानी दलीलें) **हैं** (कि असल देने वाला वो ही है बस इन दलीलों को जो आदमी समझ लेगा न वो नेमत को अपना हुनर समझेगा और न शिर्क करेगा)(52)।

**नोटः**- हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह० फ़रमाते हैं कि मुझे कुरआने करीम की एक ऐसी आयत मालूम है कि उस को पढ़ कर आदमी जो दुआ़ करता है कुबूल होती है। फिर ये ही आयत बताई आयत नं० 46:

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٦

***"कुलिल्लाहुम्मा फ़ातिरस्समावाति वल अ़र्ज़ि आ़लिमल ग़ैबि वश्शहादति अन्त्ा तहकुमु बैन्*** ***इबादिक् फ़ी मा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून"।***

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥٣ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝٥٤ وَاتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٥٥ اَنْ تَقُوْلَ
نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝٥٦ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٥٧ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٨ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ
فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٩ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَي اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ
اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٦٠ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْۗءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٦١

आयत नं० 53 से 61

**नोटः**- कुछ लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा था कि हम इतने बड़े-बड़े गुनाह कर चुके हैं अब अगर मुसलमान हो भी गये तो क्या हमारी तौबा कुबूल हो सकेगी इस पर ये आयतें उतरीं किः-

**आप** (इन सवाल करने वालों के जवाब में मेरी तरफ़ से) **कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने** (कुफ़्र व शिर्क करके) **अपने ऊपर ज़्यादतियां की हैं कि तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो,** (और यह न सोचो कि ईमान लाने के बाद पिछले गुनाहों पर पकड़ होगी तो यह बात नहीं बल्कि) **यक़ीन जानो अल्लाह तआ़ला** (इस्लाम की बरकत से) **सारे** (पिछले) **गुनाहों को** (चाहे कुफ़्र व शिर्क ही क्यों न हों) **मुआफ़ कर देगा, बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला बड़ी रहमत करने वाला है**(53) **और** (कुफ़्र से तौबा करने के लिए) **तुम अपने रब की तरफ़ लौ लगाओ और** (इस्लाम क़ुबूल करने में) **उस का कहना मानो इससे पहले कि** (इस्लाम न लाने की सूरत में) **तुम पर** (अल्लाह का) **अज़ाब आजाए** (और) **फिर** (उस वक़्त किसी की तरफ़ से) **तुम्हारी कोई मदद न कीजाए** (यानी जैसा इस्लाम लाने की सूरत में सब कुफ़्र व शिर्क मुआफ़ हो जाएगा इसी तरह इस्लाम न लाने की सूरत में इस कुफ़्र व शिर्क पर अज़ाब होगा जिसका कोई हटाने वाला नहीं)(54) **और** (जब इस्लाम न लाने का यह अन्जाम है तो) **तुम** (को चाहिए कि) **अपने रब के पास से आए हुए** (सभी) **अच्छे-अच्छे हुक्मों पर चलो इससे पहले कि तुम पर अचानक** (आख़रत का) **अज़ाब आजाए और तुम को** (उस का) **ध्यान भी न हो**(55) (और यह इस्लाम लाने का हुक्म इसलिए दिया जाता है कि) **कभी** (कल क़ियामत के दिन) **कोई आदमी कहने लगे कि अफ़सोस मेरी उस ग़लती पर जो मैंने अल्लाह के** (हुक्मों के) **बारे में की और मैं तो अल्लाह के हुक्मों पर हंसता ही रहा**(56) **या कोई यह कहने लगे कि अगर अल्लाह तआ़ला** (दुनिया में) **मुझ को हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में से होता** (मगर हिदायत ही न हुई इसलिए ये सारे क़ुसूर हुए जिसमें मैं मजबूर हूं)(57) **या कोई अज़ाब को देख कर यह कहने लगे काश मेरा** (दुनिया में) **फिर जाना हो जाए फिर मैं नेक बन्दों में हो जाऊं**(58) (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं तुझे हिदायत) **क्यों नहीं** (दी गई) **बेशक तेरे पास मेरी आयतें पहुंची थी सो तूने उनको झुटलाया और** (झुटलाना किसी शक से न था बल्कि) **तूने घमन्ड किया और** (यह भी नहीं कि बाद में बदल जाता बल्कि सदा) **काफ़िरों में शामिल रहा** (और इसलिए तेरा यह कहना ग़लत है कि मुझे हिदायत नहीं पहुंची)(59) **और** (ऐ पैग़म्बर) **आप क़ियामत के दिन उन लोगों के चेहरे सियाह देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूट बोला था** (इसमें दो बातें आ गईं जो बात अल्लाह ने नहीं कही जैसे शिर्क उस को यह कहना अल्लाह ने कही है और जो बात अल्लाह ने कही जैसे क़ुरआन उसको यह कहना अल्लाह ने नहीं कही है), **क्या उन घमन्डियों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है** (जो कि घमन्ड और मुख़ालफ़त से झुटलाएं)(60) **और जो लोग** (शिर्क व कुफ़्र से) **बचते थे अल्लाह तआ़ला उन को कामयाबी के**

**साथ** (जहन्नम से) **बचाएगा, उन को** (ज़रा) **तकलीफ़ न पहुंचेगी और न उन्हें किसी बात का ग़म होगा** (क्योंकि जन्नत में ग़म नहीं है)(61)

**नोटः**- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि सूरत ज़ुमर की यह आयत (नं० 53) गुनाहगारों के लिए क़ुरआन की सब आयतों से ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली है।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ ؗ وَّ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ۝٦٢ لَهٗ مَقَالِیْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٦٣ قُلْ اَفَغَیْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّیْٓ اَعْبُدُ اَیُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝٦٤ وَ لَقَدْ اُوْحِیَ اِلَیْكَ وَ اِلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَىِٕنْ اَشْرَكْتَ لَیَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ۝٦٥ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَ كُنْ مِّنَ الشّٰكِرِیْنَ ۝٦٦ وَ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖۗ وَ الْاَرْضُ جَمِیْعًا قَبْضَتُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ السَّمٰوٰتُ مَطْوِیّٰتٌۢ بِیَمِیْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ۝٦٧

आयत नं० 62 से 67

**अल्लाह ही पैदा करने वाला है हर चीज़ का और वो ही हर चीज़ का रखवाला है**(62) **उसी के क़ब्ज़े में कुन्जियां हैं सारे आसमानों और ज़मीन की** (यानी इन सब चीज़ों का पैदा करने वाला और इनकी हिफ़ाज़त करने वाला वो ही है और मालिक भी वो ही है तो जब वो ही पैदा करने वाला और मालिक है इस बात को तो सभी मानते हैं तो इबादत भी उसी की होनी चाहिए), **और जो लोग** (इस पर भी) **अल्लाह की आयतों को नहीं मानते वो बड़े नुक़सान में रहेंगे**(63) (और ये लोग ख़ुद तो कुफ़्र व शिर्क करते ही थे अब इन का हौसला यहां तक बढ़ा कि आप को भी अपने तरीक़े पर लाने की कोशिश करते हैं तो) **आप कह दीजिए कि ऐ जाहिलो** (ऊपर की दलीलों से तौहीद का पूरा सबूत और कुफ़्र व शिर्क का ग़लत होना साबित हो जाने के बाद) **फिर भी तुम मुझ को अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत करने के लिए कहते हो**(64) (और आप कुफ़्र व शिर्क कैसे कर सकते हैं जब कि) **आप की तरफ़ भी और जो पैग़म्बर आप से पहले आ चुके हैं उन की तरफ़ भी यह वही भेजी जा चुकी है कि** (हर उम्मती को पहुंचा दें कि) **अगर तू शिर्क करेगा तो तेरा किया कराया काम सब बर्बाद हो जाएगा और तू नुक़सान उठाएगा** (इसलिए तू कभी शिर्क के पास न जाना)(65) **बल्कि अल्लाह ही की इबादत करना और** (उसी का) **शुक्र अदा करते रहना** (और जब पैग़म्बर ये ही बात समझाने के लिए भेजे गये तो वो ख़ुद शिर्क कैसे कर सकते

हैं)(66) **और** (अफ़सोस है कि) **उन लोगों ने अल्लाह तआ़ला की बड़ाई व क़द्र न पहचानी जैसा कि पहचानना चाहिए था, हालांकि सारी ज़मीन उसी की मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन और सारे आसमान लिपटे हुए होंगे उसके दाहिने हाथ में** (यानी उस की क़ुदरत की कोई हद नहीं, और) **वो पाक है और बहुत ऊपर है उनके शिर्क से**(67)

**नोटः-** अल्लाह तआ़ला की मुट्ठी और हाथ से क्या मुराद है इसे जानने की कोशिश को भी मना किया गया है बस इस पर ईमान लाना कि जो कुछ इससे अल्लाह तआ़ला की मुराद हो वो हक़ और सही है।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ
يَّنْظُرُوْنَ ۝٦٨ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْۗءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَاۗءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٦٩ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٧٠ۧ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى
جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ
اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۝٧١ قِيْلَ
ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٧٢ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ
زُمَرًا ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۝٧٣ وَ
قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاۗءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝٧٤ وَ
تَرَى الْمَلٰۗىِٕكَةَ حَاۗفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٥ۧ

आयत नं० 68 से 75

**और** (क़ियामत के दिन जब) **सूर में फूंक मारी जाएगी तो सारे आसमान और ज़मीन वालों के होश उड़ जाएंगे** (फिर ज़िन्दा तो मर जाएंगे और मुर्दों की रूहें बेहोश हो जाएंगी) **मगर जिस को अल्लाह चाहे** (वो इस बेहोशी और मौत से बचा रहेगा), **फिर उस** (सूर) **में दोबारा फूंक मारी जाएगी तो अचानक सब के सब** (होश में आकर रूहों का ताल्लुक़ जिसमों से होकर क़ब्रों से

निकल) **खड़े हो जाएंगे** (और) **चारों तरफ़ देखने लगेंगे** (जैसा कि किसी अजीब हादसे के वक़्त होता है)(68) **और** (फिर अल्लाह तआ़ला हिसाब के लिए ज़मीन पर अपनी शान के मुनासिब जलवा करेंगे और) **ज़मीन अपने रब के नूर से चमक जाएगी और** (सब का) **आमाल नामा** (हर एक के सामने) **रख दिया जाएगा और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किये जाएंगे और सब** (लोगों) **में** (कामों के हिसाब से) **ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा** (कि कोई नेकी छुपा ली जाए या कोई बुराई बढ़ा दी जाए)(69) **और हर आदमी को उस के कामों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा** (कि नेक काम घटाए न जाएंगे और बुरे काम बढ़ाए न जाएंगे) **और वो सब के कामों को अच्छी तरह जानता है** (बस उस को हर एक के हिसाब से बदला देना कुछ मुश्किल नहीं)(70) **और** (फ़ैसला यह होगा कि) **जो काफ़िर हैं वो जहन्नम की तरफ़ गिरोह बनाकर** (धक्के देकर बेइज़्ज़ती के साथ) **ले जाए जाएंगे, यहां तक कि जब दोज़ख़ के पास पहुंचेंगे तो** (उस वक़्त) **उसके दरवाज़े खोल दिये जाएंगे और उनसे दोज़ख़ के दरोग़ा** (फ़रिशते झिड़कते हुए) **कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम ही लोगों में से पैग़म्बर न आए थे** (कि उन से फ़ाइदा उठाना कुछ मुश्किल न था और) **जो तुम को तुम्हारे रब की आयतें पढ़ कर सुनाया करते थे और तुम को तुम्हारे इस दिन के आने से ख़बरदार किया करते थे, वो काफ़िर कहेंगे कि हां** (पैग़म्बर भी आए थे और उन्होंने ख़बरदार भी किया था) **लेकिन अज़ाब की बात काफ़िरों पर** (जिनमें हम भी दाख़िल हैं) **सच होकर रही** (यानी अपने जुर्म का इक़रार करेंगे)(71) **कहा जाएगा** (यानी वो फ़रिशते उन काफ़िरों से कहेंगे) **कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ** (और) **सदा उसमें रहा करो बस** (अल्लाह के हुक्मों से) **घमन्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है** (फिर उस के बाद वो जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे और दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे यह तो काफ़िरों का हाल हुआ)(72) **और जो लोग अपने रब से डरते थे** (जिसकी पहली सीढ़ी ईमान है फिर आगे उसके बहुत से दर्जे हैं) **वो गिरोह-गिरोह होकर** (नेकियों के हिसाब से) **जन्नत की तरफ़** (शौक़ दिलाकर जल्दी) **ले जाए जाएंगे, यहां तक कि जब उस** (जन्नत) **के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े** (पहले से) **खुले हुए होंगे** (जैसे महमान के लिए पहले से दरवाज़ा खोल दिया जाता है) **और वहां के दरोग़ा** (फ़रिशते) **उन से** (इज़्ज़त और तारीफ़ से) **कहेंगे कि अस्सलामु अलैकुम तुम मज़े में रहो सो इस** (जन्नत) **में सदा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ** (उस वक़्त उसमें दाख़िल हो जाएंगे)(73) **और** (दाख़िल होकर) **कहेंगे कि अल्लाह का** (लाख-लाख) **शुक्र है जिसने हम को इस ज़मीन का मालिक बना दिया कि हम जन्नत में जहां चाहें रहें** (यानी हर आदमी को बड़ी जगह मिलेगी और सैर के लिए दूसरे

जन्नती के दर्जे में भी जा सकेंगे) **बस** (नेक) **काम करने वालों का अच्छा बदला है**(74) **और फ़रिश्तों को देखेंगे कि** (हिसाब के वक़्त) **अर्श को घेरे हुए अपने रब की तस्बीह व हम्द करते होंगे और सारे बन्दों में ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और** (इस फ़ैसले के ठीक होने पर हर तरफ़ से जोश के साथ ये ही आवाज़ होगी और) **कहा जाएगा कि सारी ख़ूबियां अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है**(75)।

**नोटः**- यहां यह भी मालूम हुआ कि जन्नती हज़रात को मुलाक़ात के लिए एक दूसरे के महलों में जाने की इजाज़त भी होगी भले ही उनके दर्जे अलग-अलग हों।

# 40-सूरत-मुमिन

**इस मक्की सूरत में '9' रूकू और '85' आयतें हैं**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

**शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है**

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٢ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝٤
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ وَ هَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَ جٰدَلُوْا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٥ وَ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝٦ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَ مَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ
يَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَ
قِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٧ رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ اِلَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ
ذُرِّيّٰتِهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨ وَ قِهِمُ السَّيِّاٰتِ وَ مَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ وَ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩

आयत नं० 01 से 09

**हामीम** (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **हर चीज़ का जानने वाला है(02)** (जो) **गुनाह मुआफ़ करने वाला और तौबा का कुबूल करने वाला है** (और) **सख़्त सज़ा देने वाला** (और) **बड़ी ताक़त वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, उसी के पास** (सब को) **जाना है(03)** (होना तो यह चाहिए था कि इसका इनकार न किया जाए मगर फिर भी) **अल्लाह तआ़ला की इन आयतों में** (यानी कुरआन में) **वो ही लोग** (नाहक़ के) **झगड़े निकालते हैं जो इसका इनकार करते हैं** (और इसलिए उनको फ़ौरन सज़ा दी जाती मगर उनको इस पर जल्द सज़ा न होना एक ढील

है) **सो उन लोगों का शहरों में** (अमन से दुनिया के कारोबार के लिए) **चलना फिरना आप** (लोगों) **को शक में न डाले** (कि इससे यह समझ लिया जाए कि ये इसी तरह सज़ा व अज़ाब से बचे रहेंगे और आराम से रहेंगे बल्कि इन की पकड़ ज़रूर होगी चाहे दुनिया में भी और आख़रत में भी या सिर्फ़ आख़रत में)(04) **इन से पहले नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने और दूसरे गिरोहों ने भी जो उन के बाद हुए** (जैसे आद व समूद ने सच्चे दीन को) **झुटलाया था और हर उम्मत** (में से जो लोग ईमान न लाए थे उन्हों)**ने अपने पैग़म्बर के गरिफ़्तार करने का इरादा किया** (कि पकड़ कर क़त्ल कर दें) **और नाहक़ के झगड़े निकाले ताकि उस नाहक़ से हक़ को मिटा दें सो मैंने** (आख़िर) **उन को पकड़ लिया, सो** (देखो) **मेरी तरफ़ से** (उन को) **कैसी सज़ा हुई(05) और** (जिस तरह उन को दुनिया में सज़ा हुई) **इसी तरह सभी काफ़िरों पर आप के रब की यह बात साबित हो चुकी है कि वो लोग** (आख़रत में) **दोज़ख़ी होंगे** (यानी यहां भी सज़ा हुई और वहां भी होगी इसी तरह इन काफ़िरों को भी सज़ा होने वाली है चाहे दोनो जगह या सिर्फ़ आख़रत में)(06) **जो फ़रिशते** (ख़ुदाई) **अर्श को उठाए हुए हैं और जो फ़रिशते उस को घेरे हुए हैं वो अपने रब की तस्बीह व हम्द करते रहते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए** (इस तरह) **बख़्शिश की दुआ किया करते हैं कि या रब हमारे आप की रहमत और इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है** (तो ईमान वालों पर तो ख़ास रहमत होगी) **तो उन लोगों को बख़्श दीजिए जिन्होंने** (शिर्क व कुफ़्र से) **तौबा कर ली है और आप के रास्ते पर चलते हैं और उन को जहन्नम के अज़ाब से बचा लीजिए(07) या रब हमारे और** (दोज़ख़ से बचाकर) **उन को सदा रहने की जन्नतों में दाख़िल कर दीजिए जिसका आपने उनसे वादा किया है और उनके मां बाप और बीवियों और औलाद में जो** (जन्नत के) **लाइक़** (यानी मोमिन) **हों** (चाहे उन मोमिनों के दर्जे के न हों) **उन को भी दाख़िल कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले) **हिकमत वाले** (हैं कि मुआफ़ करने की क़ुदरत रखते हैं और हिकमत से हर एक के मुनासिब दर्जा देते) **हैं(08) और** (यह भी दुआ है कि) **उन को** (क़ियामत के दिन हर तरह की) **तकलीफ़ से बचाइये, और आप जिस को उस दिन तकलीफ़ से बचालें तो उस पर आप ने** (बहुत) **महरबानी की, और यह** (अज़ाब से बचाना और जन्नत में दाख़िल करना) **बड़ी कामयाबी है(09)**

**नोटः**- एक हदीस में है कि जो शुरू दिन में आयतुल कुर्सी और सूरत मोमिन की पहली तीन आयतें (हामीम से इलैहिल मसीर तक) पढ़ले वो उस दिन हर बुराई और तकलीफ़ से बचा रहेगा। (तिरमिज़ी)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝۱۰ قَالُوْا
رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَ اَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝۱۱ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا
دُعِىَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِىِّ الْكَبِيْرِ ۝۱۲

आयत नं० 10 से 12

**जो लोग काफ़िर हुए** (वो जब दोज़ख़ में जाकर अपने शिर्क व कुफ़्र पर पछताएंगे और अफ़सोस करेंगे और ख़ुद उन को अपने से सख़्त नफ़रत होगी उस वक़्त) **उन को पुकार कहा जाएगा कि जैसी तुम को** (इस वक़्त) **अपने से नफ़रत है इससे बढ़कर अल्लाह को** (तुम से उस वक़्त) **नफ़रत** (होती) **थी जब कि तुम** (दुनिया में) **ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे फिर** (भी) **तुम नहीं माना करते थे** (इस तरह उनके पछतावे को और बढ़ाया जाएगा)(10) **वो लोग कहेंगे या रब हमारे** (हम जो दोबारा ज़िन्दा होने का इनकार किया करते थे अब हम को अपनी ग़लती पता चल गई जैसा कि देख लिया कि) **आपने हम को दो बार मुर्दा रक्खा** (एक बार पैदा होने से पहले कि हम बेजान चीज़ थे और दूसरी बार मौत से मुर्दा हुए) **और दोबार ज़िन्दगी दी** (एक दुनिया की ज़िन्दगी और दूसरी आख़रत की ज़िन्दगी) **सो हम ग़लतियों का इक़रार करते हैं तो क्या** (यहां से) **निकलने की कोई सूरत है**(11) (निकलने की इजाज़त न होना) **इसलिए कि जब सिर्फ़ अल्लाह का नाम लिया जाता था** (यानी तौहीद की बात होती थी) **तो तुम इनकार किया करते थे और अगर उसके साथ किसी को साझी किया जाता था तो तुम मान लेते थे, इसलिए यह फ़ैसला अल्लाह का** (किया हुआ) **है जो ऊंची शान वाला** (और) **सबसे बड़ा है** (यानी अल्लाह की बड़ाई के हिसाब से यह जुर्म बड़ा था इसलिए फ़ैसले में सज़ा भी बड़ी हुई यानी सदा का जहन्नम)(12)

**नोटः-** जो लोग दुनिया में आख़रत और वहां की ज़िन्दगी का इनकार करते हैं वहां अपनी ग़लती का इक़रार करेंगे मगर फिर कोई फ़ाइदा नहीं।

هُوَ الَّذِىْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ۝۱۳ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝۱۴ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِى الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝۱۵ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَىْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ

الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَ
اَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۬ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّ لَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ ﴿١٨﴾
يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَ مَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾ وَ اللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ
بِشَىْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ اَوَ لَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّاقٍ ﴿٢١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِىٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

आयत नं० 13 से 22

**वो** (अल्लाह) **ही है जो तुम को अपनी** (कुदरत की) **निशानियां दिखाता है** (ताकि तुम इन से तौहीद पर दलील पकड़ो) **और** (वो ही है जो) **आसमान से तुम्हारे लिए रोज़ी भेजता** (है यानी बारिश भेजता है जिससे पैदावार होती) **है, और** (इन निशानियों से) **सिर्फ़ वो ही आदमी नसीहत माना करता है जो** (अल्लाह की तरफ़) **ध्यान लगाता है(13) तो** (जब तौहीद के पक्के सबूत मौजूद हैं तो) **तुम लोग अल्लाह को ख़ालिस ऐतक़ाद करके** (यानी तौहीद के साथ) **पुकारो** (और मुसलमान हो जाओ) **चाहे काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे** (इसकी परवाह न करो)(14) **वो ऊंचे दर्जों वाला है वो अर्श का मालिक है वो अपने बन्दों में से जिस पर चाहे वही यानी अपना हुक्म भेजता है ताकि वो** (पैग़म्बर लोगों को) **जमा होने के दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **से ख़बरदार करे(15) जिस दिन सब लोग** (अल्लाह के सामने) **आ मौजूद होंगे** (कि) **उनकी बात अल्लाह से छुपी न रहेगी, आज के दिन किस की हुकूमत होगी, अल्लाह ही की होगी जो अकेला है** (और) **और ज़ोर आवर है(16) आज हर आदमी को उस के किये** (हुए कामों) **का बदला दिया जाएगा, आज** (किसी पर) **कुछ ज़ुल्म न होगा, अल्लाह तआला बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है(17) और** (इसलिए) **आप एक नज़दीक आने वाली मुसीबत के दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **से डराइये जिस वक़्त** (ग़म से) **घुट-घुट कर कलेजे मुंह को आजाएंगे,** (उस दिन) **ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **का न दिली दोस्त और न कोई सिफ़ारिशी होगा जिस का कहा माना जाए(18)** (और) **वो** (अल्लाह ऐसा है कि) **आंखों की चोरी को** (भी) **जानता है और उन** (बातों) **को भी जो सीनों में छुपा रक्खी हैं** (जिन को दूसरा नहीं जानता मतलब यह कि वो बन्दों के सभी खुले और छुपे कामों की ख़बर रखता है जिस पर सज़ा या सवाब मिलना है)(19) **और अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर**

देगा, और अल्लाह के सिवा जिन को ये लोग पुकारा करते हैं वो किसी तरह का भी फ़ैसला नहीं कर सकते, (क्योंकि) अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला सब कुछ देखने वाला है(20) (और ये लोग जो इन खुली दलीलों के बाद भी इनकार करते हैं तो) क्या इन लोगों ने मुल्क में चल फिर कर नहीं देखा कि जो (काफ़िर) लोग इनसे पहले हो चुके हैं (इस कुफ़्र की वजह से) उन का कैसा अन्जाम हुआ, वो लोग ताक़त और उन निशानियों में जो ज़मीन पर छोड़ गये हैं (जैसे इमारतें और बाग़ वग़ैरह) इन (लोगों) से बहुत बढ़े हुए थे फिर उनके गुनाहों की वजह से अल्लाह ने उन्हें पकड़ा (यानी अज़ाब भेजा), और उनका कोई अल्लाह से बचाने वाला न हुआ(21) (और) यह (अज़ाब में) पकड़ना इस वजह से हुआ कि उनके पास उनके पैग़म्बर खुली निशानियां (यानी मोजिज़े जो पैग़म्बरी का सबूत होते हैं) लेकर आते रहे फिर (भी) उन्होंने न माना तो अल्लाह तआला ने उन को पकड़ा, बेशक वो बड़ा ताक़त वाला सख़्त सज़ा देने वाला है (जब इन मौजूदा काफ़िरों में भी वो ही अज़ाब का हक़दार बनाने वाली बातें मौजूद हैं तो ये पकड़ से कैसे बच सकते हैं)(22)

وَ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰی بِاٰيٰتِنَا وَ سُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ۙ﴿۲۳﴾ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ وَ هَامٰنَ وَ قَارُوۡنَ فَقَالُوۡا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿۲۴﴾ فَلَمَّا
جَآءَهُمۡ بِالۡحَقِّ مِنۡ عِنۡدِنَا قَالُوا اقۡتُلُوۡۤا اَبۡنَآءَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ وَ اسۡتَحۡيُوۡا نِسَآءَهُمۡ ؕ وَ مَا كَيۡدُ الۡكٰفِرِيۡنَ اِلَّا
فِیۡ ضَلٰلٍ ﴿۲۵﴾ وَ قَالَ فِرۡعَوۡنُ ذَرُوۡنِیۡۤ اَقۡتُلۡ مُوۡسٰی وَ لۡيَدۡعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّیۡۤ اَخَافُ اَنۡ يُّبَدِّلَ دِيۡنَكُمۡ اَوۡ اَنۡ يُّظۡهِرَ
فِی الۡاَرۡضِ الۡفَسَادَ ﴿۲۶﴾ وَ قَالَ مُوۡسٰۤی اِنِّیۡ عُذۡتُ بِرَبِّیۡ وَ رَبِّكُمۡ مِّنۡ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤۡمِنُ بِيَوۡمِ الۡحِسَابِ ﴿۲۷﴾ وَ
قَالَ رَجُلٌ مُّؤۡمِنٌ ٭ۖ مِّنۡ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ يَكۡتُمُ اِيۡمَانَهٗۤ اَتَقۡتُلُوۡنَ رَجُلًا اَنۡ يَّقُوۡلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَ قَدۡ جَآءَكُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ
مِنۡ رَّبِّكُمۡ ؕ وَ اِنۡ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيۡهِ كَذِبُهٗ ۚ وَ اِنۡ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبۡكُمۡ بَعۡضُ الَّذِیۡ يَعِدُكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَهۡدِیۡ مَنۡ هُوَ مُسۡرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۲۸﴾ يٰقَوۡمِ لَكُمُ الۡمُلۡكُ الۡيَوۡمَ ظٰهِرِيۡنَ فِی الۡاَرۡضِ ۫ فَمَنۡ يَّنۡصُرُنَا مِنۡۢ بَاۡسِ
اللّٰهِ اِنۡ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرۡعَوۡنُ مَاۤ اُرِيۡكُمۡ اِلَّا مَاۤ اَرٰی وَ مَاۤ اَهۡدِيۡكُمۡ اِلَّا سَبِيۡلَ الرَّشَادِ ﴿۲۹﴾ وَ قَالَ الَّذِیۡۤ اٰمَنَ
يٰقَوۡمِ اِنِّیۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ مِّثۡلَ يَوۡمِ الۡاَحۡزَابِ ۙ﴿۳۰﴾ مِثۡلَ دَاۡبِ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوۡدَ وَ الَّذِيۡنَ مِنۡۢ
بَعۡدِهِمۡ ؕ وَ مَا اللّٰهُ يُرِيۡدُ ظُلۡمًا لِّلۡعِبَادِ ﴿۳۱﴾ وَ يٰقَوۡمِ اِنِّیۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ يَوۡمَ التَّنَادِ ۙ﴿۳۲﴾ يَوۡمَ تُوَلُّوۡنَ
مُدۡبِرِيۡنَ ۚ مَا لَكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ عَاصِمٍ ۚ وَ مَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ﴿۳۳﴾ وَ لَقَدۡ جَآءَكُمۡ يُوۡسُفُ مِنۡ

قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚۖ ﴿۳۴﴾ اِلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ
مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿۳۵﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ
ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿۳۶﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَ
كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿۳۷﴾ وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ
يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿۳۸﴾ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ
الْقَرَارِ ﴿۳۹﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۴۰﴾ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى
النَّارِ ﴿۴۱﴾ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۫ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿۴۲﴾ لَا
جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ
هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿۴۳﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۴۴﴾
فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿۴۵﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَ
يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿۴۶﴾

आयत नं० 23 से 46

**और हम ने भेजा मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को अपने हुक्म और खुली दलील** (यानी मोजिज़ा) **देकर(23) फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास तो उन लोगों** (में से कुछ ने या सब) **ने कहा कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **यह जादूगर** (और) **झूटा है** (जादूगर मोजिज़े में कहा और झूटा पैग़म्बरी के दावे में)(24) **फिर** (उसके बाद) **जब वो** (आम) **लोगों के पास सच्चा दीन जो हमारी तरफ़ से था लेकर आए** (जिस पर कुछ लोग मुसलमान भी हो गये) **तो उन लोगों ने** (आपस में मशवरा किया और) **कहा कि जो लोग इनके साथ** (होकर) **ईमान ले आए हैं उन के बेटों को क़त्ल कर दो** (ताकि उनकी गिनती और ज़ोर न बढ़े जिससे हुकूमत जाने का डर है) **और** (क्योंकि औरतों से ऐसा ख़तरा नहीं है दूसरे हमारे घरों में काम के लिए भी चाहिए इसलिए) **उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो, और उन काफ़िरों की चाल नाकाम रही** (जैसा कि आख़ीर में मूसा अलैहिस्सलाम ही

कामयाब हुए)(25) **और फ़िरऔन ने** (दरबार वालों से) **कहा कि लाओ मैं मूसा को क़त्ल कर डालूं और उस को चाहिए कि अपने रब को** (मदद के लिए) **पुकार ले मुझे डर है कि वो** (कहीं) **तुम्हारा दीन** (न) **बदल डाले या मुल्क में कोई फ़साद** (न) **फैला दे** (कि एक नुक़सान दीन का है और दूसरा दुनिया का)(26) **और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (जो यह बात सुनी तो) **कहा मैं अपने और तुम्हारे** (यानी सब के) **रब की पनाह लेता हूं हर सर फिरे आदमी** (की बुराई) **से जो हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता** (और इसलिए हक़ का मुक़ाबिला करता है)(27) **और** (वहां मौजूद) **एक मोमिन आदमी ने जो कि फ़िरऔन के ख़ानदान में से थे** (और अब तक) **अपना ईमान छुपाए हुए थे** (यह मशवरा सुन कर लोगों से) **कहा क्या तुम एक आदमी को** (सिर्फ़) **इस बात पर क़त्ल करते हो कि वो कहता कि मेरा रब अल्लाह है हालांकि वो तुम्हारे रब की तरफ़ से** (इस दावे पर) **दलीलें** (भी) **लेकर आया है** (यानी मोजिज़े भी दिखाता है जो पैग़म्बरी के दावे की सच्चाई की दलील) **है, और अगर** (मान लो) **वो झूटा ही हो तो उस का झूट उसी पर पड़ेगा** (और आप ही अल्लाह की तरफ़ से रूसवा हो जाएगा क़त्ल करने की क्या ज़रूरत) **और अगर वो सच्चा हुआ तो** (ईमान न लाने पर) **जिस** (अज़ाब) **की वो ख़बर दे रहा है उसमें से कुछ तो तुम पर** (ज़रूर ही) **पड़ेगा** (तो इस सूरत में क़त्ल करने से और ज़्यादा मुसीबत अपने सर लेना है), **अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी को हिदायत नहीं देता** (यानी कामयाब नहीं करता) **जो** (अपनी) **हद से बढ़ जाने वाला** (और) **बहुत झूट बोलने वाला हो** (चाहे कुछ दिन उसकी बात चल जाए मगर अन्जाम नाकामी है)(28) **ऐ मेरे भाइयों आज तो तुम्हारा राज है इस ज़मीन में तुम हाकिम हो, लेकिन अल्लाह के अज़ाब में हमारी कौन मदद करेगा अगर** (इनके क़त्ल करने से) **वो हम पर आपड़ा** (जैसा इनके सच्चा होने की सूरत में इस का ख़तरा है), **फ़िरऔन ने** (ये बातें सुनकर जवाब में) **कहा कि मैं तो तुम को वो ही राय दूंगा जो ख़ुद समझ रहा हूं** (कि इन का क़त्ल कर देना ही ठीक है) **और मैं तुम को भलाई का रास्ता बताता हूं**(29) **और उस मोमिन ने** (जब देखा कि नर्मी की नसीहत से काम नहीं चलता तो डराने के लिए) **कहा कि साहिबो मुझे डर है कि तुम पर भी दूसरी उम्मतों जैसा बुरा दिन न आजाए**(30) **जैसा कि नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम और आद और समूद और बाद वालों** (यानी क़ौमे लूत) **का हाल हुआ था, और अल्लाह तआ़ला तो बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं चाहता** (लेकिन जब तुम काम ही ऐसे करोगे तो ज़रूर सज़ा पाओगे)(31) **और** (यह डराना था दुनिया के अज़ाब से आगे आख़रत के अज़ाब से डराना है कि) **साहिबो मुझ को तुम पर उस दिन का डर है जिसमें चीख़ पुकार मची**

**होगी**(32) **जिस दिन** (हिसाब की जगह से) **पीठ फेर कर** (दोज़ख़ की तरफ़) **लौटोगे** (और उस वक़्त) **तुम को अल्लाह** (के अज़ाब) **से कोई बचाने वाला न होगा** (और यह बातें ऐसी हैं कि ईमान ले आना चाहिए लेकिन) **जिस को अल्लाह गुमराह करे उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं**(33) **और इससे पहले तुम लोगों** (यानी तुम्हारे बड़ों) **के पास यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम तौहीद व पैग़म्बरी की) **दलीलें लेकर आ चुके हैं तो तुम** (यानी तुम्हारे बड़े) **उन बातों में भी बराबर शक** (व इनकार) **ही में** (पड़े) **रहे जो वो तुम्हारे पास लेकर आए थे, यहां तक कि जब वो इन्तिक़ाल कर गये तो तुम कहने लगे कि बस अब अल्लाह किसी पैग़म्बर को न भेजेगा** (कि जब इन को नहीं माना तो दूसरे को भेजने से क्या फ़ाइदा तो सदा के लिए यह झगड़ा ख़त्म हो गया, असली मंशा पैग़म्बरी का इनकार है), **इसी तरह अल्लाह तआ़ला आपे से बाहर हो जाने वाले** (और) **शक करने वाले लोगों को ग़लती में डाले रखता है**(34) **जो अपने पास किसी सनद के मौजूद हुए बिना झगड़े निकाला करते हैं, इस बात से अल्लाह तआ़ला को बड़ी नफ़रत है और मोमिनों को भी, और** (जिस तरह तुम्हारे दिलों पर बन्द लगा रक्खा है) **इसी तरह अल्लाह तआ़ला हर घमन्डी सितमगर के दिल पर बन्द लगा देता है** (कि वो सही बात समझ नहीं सकता ये नसीहतें उन बुज़ुर्ग मोमिन की हैं जो फ़िरऔन के ख़ानदान में से हैं)(35) **और फ़िरऔन ने** (जो ये लाजवाब बातें सुनीं तो उस मोमिन को कुछ जवाब न दे सका मगर हटधर्मी से) **कहा ऐ हामान मेरे लिए एक ऊंची इमारत बनवाओ** (मैं उस पर चढ़ कर देखूंगा) **शायद मैं उन रास्तों तक पहुंच जाऊं**(36) **जो आसमान के रास्ते हैं फिर** (वहां जाकर) **मूसा के ख़ुदा को झांक कर देखूं और मैं तो मूसा को** (उस के दावे में) **झूटा समझता हूं, और इसी तरह फ़िरऔन के** (और) **बुरे काम भी उसको अच्छे लगते थे और** (सीधे) **रास्ते से रूक गया, और** (मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबिले में बड़ी-बड़ी चालें चलीं मगर) **फ़िरऔन की हर चाल बेकार गई** (किसी में कामयाब न हुआ)(37) **और उस मोमिन ने** (फिर) **कहा कि ऐ भाइयों तुम मेरे रास्ते पर चलो मैं तुम को ठीक-ठीक रास्ता बताता हूं**(38) **ऐ भाइयों यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े दिनों की है, और** (असल) **रहने की जगह तो आख़रत है**(39) (जहां बदला देने का क़ानून यह है कि) **जो आदमी गुनाह करता है तो उस को उसी के बराबर बदला दिया जाएगा और जो नेक काम करता है चाहे मर्द हो या औरत शर्त यह है कि मोमिन हो ऐसे लोग जन्नत में जाएंगे** (और) **वहां उन को बेहिसाब रोज़ी मिलेगी**(40) **और** (यह भी कहा) **ऐ मेरे भाइयों यह क्या बात है कि मैं तुम को बख़्शिश** (यानी अज़ाब से बचाव के रास्ते) **की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझ को दोज़ख़** (के

रास्ते) **की तरफ़ बुलाते हो(41)** (यानी) **तुम मुझ को इस बात की तरफ़ बुलाते हो कि** (अल्लाह की पनाह) **मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूं और ऐसी चीज़ को उस का साझी बनाऊं जिसके** (साझी होने की) **मेरे पास कोई दलील भी नहीं, और मैं तुम को उस ज़बरदस्त** (ताक़त वाले और) **गुनाह बख़्शने वाले** (अल्लाह) **की तरफ़ बुलाता हूं(42) यक़ीनी बात है कि तुम जिस चीज़ की** (इबादत की) **तरफ़ मुझ को बुलाते हो वो न तो दुनिया में** (किसी दुनिया की ज़रूरत के लिए) **पुकारे जाने के लाइक़ है और न** (अज़ाब दूर करने के लिए) **आख़रत ही में और** (यक़ीनी बात है कि) **हम सब को अल्लाह के पास जाना है और** (यक़ीनी बात है कि) **जो लोग** (बन्दगी की) **हद से निकल रहे हैं** (जैसे अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत करने वाले) **वो सब दोज़ख़ी होंगे(43) सो** (अब तो मेरा कहना तुम्हारे जी को नहीं लगता मगर) **आगे चलकर तुम मेरी बात को याद करोगे, और** (क्योंकि उस मोमिन को यह ख़तरा पहले से है कि ये लोग इस नसीहत पर मेरे ख़िलाफ़ हो जाएंगे इसलिए यह भी कहा कि) **मैं अपना काम अल्लाह को सौंपता हूं, अल्लाह तआला सब बन्दों का** (ख़ुद) **रखवाला है** (मैं तुम से बिलकुल नहीं डरता)(44) **फिर अल्लाह तआला ने उस** (मोमिन) **को उन की बुरी चालों से बचाए रक्खा और फ़िरऔन** (और उस) **के लोगों को तकलीफ़ देने वाले अज़ाब ने आ घेरा(45) वो लोग** (उस दुनिया में) **सुबह व शाम आग के सामने लाए जाते हैं** (और उन को बताया जाता है कि तुम क़ियामत के दिन इसमें दाख़िल किये जाओगे) **और जिस दिन क़ियामत आजाएगी** (हुक्म होगा) **फ़िरऔन** (और उस) **के लोगों को बहुत सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो(46)।**

**नोटः-** एक हदीस में है कि "इन्सान के बदन में एक गोश्त का टुकड़ा (यानी दिल) ऐसा है जिसके ठीक होने से सारा बदन ठीक हो जाता है और उसके ख़राब होने से सारा बदन ख़राब हो जाता है"। (क़ुरतबी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि फ़िरऔन वालों की रूहें काले परिन्दों की शकल में हर दिन सुबह व शाम दो बार जहन्नम के सामने लाई जाती हैं और जहन्नम को दिखाकर उनसे कहा जाता है कि तुम्हारा ठिकाना यह है। (मज़हरी)

एक हदीस में है कि सिद्दीक़ीन चन्द हैं एक हबीब नज्जार जिसका ज़िक्र सूरत यासीन में है दूसरे मूमिन आले फ़िरऔन तीसरे अबूबक्र और वो उन सब में अफ़ज़ल हैं। (क़ुरतबी)

وَ اِذۡ یَتَحَآجُّوۡنَ فِی النَّارِ فَیَقُوۡلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِیۡنَ اسۡتَکۡبَرُوۡۤا اِنَّا کُنَّا لَکُمۡ تَبَعًا فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّغۡنُوۡنَ عَنَّا
نَصِیۡبًا مِّنَ النَّارِ ﴿۴۷﴾ قَالَ الَّذِیۡنَ اسۡتَکۡبَرُوۡۤا اِنَّا کُلٌّ فِیۡهَاۤ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدۡ حَکَمَ بَیۡنَ الۡعِبَادِ ﴿۴۸﴾ وَ قَالَ الَّذِیۡنَ فِی النَّارِ
لِخَزَنَۃِ جَهَنَّمَ ادۡعُوۡا رَبَّکُمۡ یُخَفِّفۡ عَنَّا یَوۡمًا مِّنَ الۡعَذَابِ ﴿۴۹﴾ قَالُوۡۤا اَوَ لَمۡ تَکُ تَاۡتِیۡکُمۡ رُسُلُکُمۡ بِالۡبَیِّنٰتِ ؕ
قَالُوۡا بَلٰی ؕ قَالُوۡا فَادۡعُوۡا ۚ وَ مَا دُعٰٓؤُا الۡکٰفِرِیۡنَ اِلَّا فِیۡ ضَلٰلٍ ﴿۵۰﴾

आयत नं० 47 से 50

**और** (वो वक़्त भी याद रक्खो) **जब कि काफ़िर लोग दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो छोटे दर्जे के लोग** (यानी पीछे चलने वाले) **बड़े दर्जे के लोगों से** (यानी जिन की वो दुनिया में बात माना करते थे) **कहेंगे कि हम** (दुनिया में) **तुम्हारे कहने में चलते थे क्या तुम हम से आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो** (यानी जब तुम ने दुनिया में हमें अपना ताबेदार बना रक्खा था तो आज तुम्हें हमारी मदद करना चाहिए)(47) **वो बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही दोज़ख़ में हैं** (यानी हम अपना ही अज़ाब कम नहीं कर सकते तो तुम्हारा क्या करेंगे) **अल्लाह तआला** (अपने) **बन्दों के बीच** (खुला) **फ़ैसला कर चुका** (है अब इसको बदलने की किस में हिम्मत) **है**(48) **और** (उसके बाद) **जितने लोग दोज़ख़ में होंगे** (यानी बड़े और पीछे चलने वाले सब मिलकर) **दोज़ख़ के दारोग़ा फ़रिशतों से कहेंगे कि तुम ही अपने रब से दुआ करो कि किसी दिन तो हम से अज़ाब हलका कर दे** (यानी एक दिन की तो अज़ाब से छुट्टी मिल जाया करे)(49) **फ़रिशते कहेंगे कि** (यह बताओ) **क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मोजिज़े लेकर नहीं आते रहे** (और दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा नहीं बताते रहे थे), **दोज़ख़ी कहेंगे हां आते तो रहे थे** (मगर हमने उनका कहना न माना), **फ़रिशते कहेंगे कि तो फिर** (हम तुम्हारे लिए दुआ नहीं कर सकते क्योंकि काफ़िरों के लिए दुआ करने की हम को इजाज़त नहीं है) **तुम ही** (अगर जी चाहे तो ख़ुद) **दुआ कर लो, और** (तुम्हारी दुआ का भी कुछ नतीजा न होगा क्योंकि) **काफ़िरों की दुआ** (आख़रत में) **बेअसर है** (क्यों कि आख़रत में कोई दुआ बिना ईमान के क़ुबूल नहीं हो सकती और ईमान का मौक़ा दुनिया ही में था वो तुम खो चुके)(50)

**नोटः-** दुनिया में तो काफ़िरों की दुआ भी क़ुबूल हो सकती है जैसे कि सबसे बड़े काफ़िर इबलीस की सबसे बड़ी दुआ क़ियामत तक ज़िन्दा रहने की क़ुबूल कर ली गई मगर आख़रत में बिना ईमान के दुआ क़ुबूल नहीं हो सकती।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ
مَعْذِرَتُهُمْ وَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَ اَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾ هُدًى وَّ ذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
بِالْعَشِيِّ وَ الْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا
هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَ مَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ۙ۬ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ لَا
الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَ قَالَ
رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ ع

आयत नं० 51 से 60

**हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िनदगी में भी मदद करते हैं** (जैसा ऊपर मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से से मालूम हुआ) **और उस दिन भी जिसमें गवाही देने वाले** (फ़रिशते जो कि आमाल नामे लिखते थे और क़ियामत के दिन इस बात की गवाही देंगे कि पैग़म्बरों ने बात पहुंचा दी थी और काफ़िरों ने झुटलाया बस वो फ़रिशते गवाही के लिए) **खड़े होंगे(51) जिस दिन ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **को उनका बहाने बनाना नफ़ा न देगा और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना है** (बस इस तरह आप और आप के पीछे चलने वाले भी कामयाब होंगे और दुशमन रूसवा और बर्बाद होंगे तो आप तसल्ली रखिए)(52) **और** (आप से पहले) **हम मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हिदायत नामा** (यानी तौरेत) **दे चुके हैं और** (फिर) **हम ने वो किताब बनी इस्राईल को पहुंचाई थी(53) वो हिदायत और नसीहत** (की किताब) **थी समझदारों के लिए** (इसी तरह आप भी पैग़म्बर हैं और आप के मानने वाले भी बनी इस्राईल की तरह आपकी किताब की ख़िदमत करेंगे और जैसे उनमें समझदार तस्दीक़ करने वाले और मानने वाले थे और कमसमझ इनकार करने वाले और मुख़ालिफ़ और इसी तरह आप की उम्मत में भी दोनों तरह के लोग हैं)(54) **सो** (इससे भी) **आप** (तसल्ली रखिए और काफ़िरों की तकलीफ़ों पर) **सब्र कीजिए बेशक अल्लाह का वादा** (बिल्कुल) **सच्चा है और** (अगर सब्र में कुछ कमी हो गई तो) **अपनी** (उस) **ग़लती की मुआफ़ी मांगिए और सुबह और शाम** (यानी पाबन्दी से) **अपने रब की हम्द के**

**साथ तस्बीह करते रहिए(55) जो लोग बिना किसी सनद के कि उनके पास मौजूद हो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं** (इसकी वजह शक नहीं बल्कि) **उनके दिलों में निरी बड़ाई** (ही बड़ाई) **है कि वो उस तक कभी पहुंचने वाले नहीं** (क्योंकि वो अपने को बड़ा समझते हैं इसलिए कहना मानने में शर्म आती है वो ख़ुद दूसरों ही को अपना ताबेदार बनाना चाहते हैं लेकिन उनको यह बड़ाई नसीब न होगी बल्कि जल्दी ही रूसवा होंगे) **सो** (जब ये ख़ुद बड़ाई चाहते हैं तो आप से जलते हैं और दुशमनी में सब कुछ करेंगे लेकिन) **आप** (डरें नहीं बल्कि उनकी बुराई से) **अल्लाह की पनाह मांगते रहिए, बेशक वो ही है सब कुछ सुनने वाला सब कुछ देखने वाला(56) बेशक आसमानों और ज़मीन का** (शुरू में) **पैदा करना आदमियों के** (दोबारा) **पैदा करने से ज़्यादा बड़ा काम है** (जिसने इतना बड़ा काम किया उसके लिए छोटा काम क्या मुश्किल) **लेकिन अक्सर लोग** (इतनी सी बात) **नहीं समझते(57) और** (समझने वाले ऐसे हैं जैसे आंखों वाले और न समझने वाले ऐसे हैं जैसे अन्धे और) **बराबर नहीं हो सकता अन्धा और देखने वाला और** (ऐसे ही) **वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और बुरे काम करने वाले** (बराबर नहीं हो सकते)**, तुम लोग बहुत ही कम समझते हो(58) क़ियामत तो ज़रूर ही आकर रहेगी उस** (के आने) **में किसी तरह का शक है ही नहीं मगर अक्सर लोग** (दलीलों को न सोचने की वजह से उसको) **नहीं मानते(59) और तुम्हारे रब ने कह दिया है कि** (दूसरों को ज़रूरत के लिए मत पुकारो बल्कि) **मुझ को पुकारो मैं** (सिवाए नामुनासिब बात के) **तुम्हारी** (हर) **दुआ क़ुबूल कर लूंगा, जो लोग** (सिर्फ़) **मेरी इबादत से** (जिसमें मुझ से दुआ मांगना भी दाख़िल है) **मुंह मोड़ते हैं** (और दूसरों को पुकारते और उनकी इबादत करते हैं यानी जो लोग शिर्क करते हैं) **वो जल्द ही** (यानी मरते ही) **रूसवा होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे(60)**

**नोटः-** एक हदीस में है कि दुआ मोमिन का हथियार है और दीन का सतून और आसमान व ज़मीन का नूर है। (हाकिम)

**मसअलाः-** किसी गुनाह या रिशतेदारी तोड़ने की दुआ मांगना हराम है वो दुआ अल्लाह तआ़ला के नज़दीक क़ुबूल भी नहीं होती।

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَی النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰی تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ یُؤْفَكُ
الَّذِیْنَ كَانُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً وَّ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَیِّنٰتُ مِنْ رَّبِّیْ ۫ وَ اُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ
یُّتَوَفّٰی مِنْ قَبْلُ وَ لِتَبْلُغُوْۤا اَجَلًا مُّسَمًّی وَّ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰۤی اَمْرًا
فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ ع

आयत नं० 61 से 68

**अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे** (नफ़े के) **लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और उसी ने दिन को** (देखने के लिए) **रौशन बनाया** (ताकि आसानी से रोज़गार करो), **बेशक अल्लाह तआ़ला की लोगों पर बड़ी ही महरबानी है** (कि उनकी भलाई का कैसा ध्यान रक्खा) **लेकिन अक्सर आदमी** (इन नेमतों का) **शुक्र नहीं करते** (बल्कि उल्टा शिर्क करते हैं)(61) **यह अल्लाह है तुम्हारा रब** (जिसका ज़िक्र हुआ न वो जिन को तुम ने घड़ रक्खा है) **वो हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, सो** (तौहीद के सबूत के बाद) **तुम लोग कहां** (शिर्क करके) **उल्टे चले जा रहे हो**(62) (और) **इसी तरह वो** (पहले) **लोग भी उल्टे चला करते थे जो अल्लाह की** (बनाई व उतारी) **निशानियों का इनकार किया करते थे**(63) **अल्लाह ही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे ठहरने की जगह बनाया और आसमान को** (ऊपर) **छत** (की तरह) **बनाया और तुम्हारी सूरत बनाई सो अच्छी सूरत बनाई** (जैसा कि सब जानते हैं कि इन्सान का नक़शा सबसे अच्छा है) **और तुम को अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दीं,** (बस) **यह अल्लाह है तुम्हारा रब सो बड़ी ऊंची शान वाला है अल्लाह जो सारे जहान का रब है**(64) **वो ही** (सदा से है और सदा) **ज़िन्दा** (रहने वाला) **है उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं सो तुम** (सब) **ख़ालिस ऐतक़ाद करके उसको पुकारा** (करो और शिर्क न किया) **करो, सारी**

**ख़ूबियां उसी अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है(65)** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन मुशरिकों को सुनाने के लिए) **कह दीजिए कि मुझ को इससे मना किया गया है कि मैं उन** (माबूदों) **की इबादत करूं जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो जबकि मेरे पास मेरे रब की निशानियां आ चुकीं** (मतलब यह कि शिर्क से मुझे मना किया गया है), **और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि मैं** (सिर्फ़) **सारे जहानों के रब के सामने** (इबादत में) **गर्दन झुका दूं** (मतलब यह कि मुझ को तौहीद का हुक्म हुआ है)**(66) वो ही है जिसने तुम को** (यानी तुम्हारे बाप आदम को) **मिट्टी से पैदा किया फिर** (आगे उन की नस्ल को) **मनी से फिर जमे हुए ख़ून से फिर तुम को बच्चा करके** (मां के पेट से) **निकालता है फिर** (तुम को ज़िन्दा रखता है) **ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंचो फिर** (तुम को और ज़िन्दा रखता है) **ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और कोई-कोई तुम में से** (इन उम्रों यानी जवानी और बुढ़ापे से) **पहले ही मर जाता है और ताकि तुम सब** (अपने-अपने नसीबी) **तय वक़्त तक पहुंचा जाओ और** (यह सब कुछ इसलिए किया) **ताकि तुम लोग** (इन बातों को सोच कर अल्लाह तआ़ला की तौहीद को) **समझो(67) वो ही है जो ज़िन्दगी देता और मौत देता है, फिर जब वो किसी काम को** (अचानक) **पूरा करना चाहता है तो बस उसके बारे में** (इतना) **कह देता है कि हो जा बस वो हो जाता है(68)**

**नोटः-** अल्लाह तआ़ला ने रात को ऐसी चीज़ बनाया कि सब एक साथ आराम कर लेते हैं अगर सब के आराम का वक़्त अलग-अलग होता तो लोगों को कामों में बड़ी परीशानी होती।

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ يُجَادِلُوۡنَ فِيۡۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصۡرَفُوۡنَ ۞ (٦٩) الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِالۡكِتٰبِ وَ بِمَاۤ اَرۡسَلۡنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ
فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ۙ (٧٠) اِذِ الۡاَغۡلٰلُ فِيۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ وَ السَّلٰسِلُ ؕ يُسۡحَبُوۡنَ ۙ (٧١) فِى الۡحَمِيۡمِ ۙ ثُمَّ فِى النَّارِ يُسۡجَرُوۡنَ ۚ (٧٢)
ثُمَّ قِيۡلَ لَهُمۡ اَيۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تُشۡرِكُوۡنَ ۙ (٧٣) مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوۡا ضَلُّوۡا عَنَّا بَلۡ لَّمۡ نَكُنۡ نَّدۡعُوۡا مِنۡ قَبۡلُ شَيۡـًٔا ؕ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الۡكٰفِرِيۡنَ (٧٤) ذٰلِكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَفۡرَحُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ وَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَمۡرَحُوۡنَ ۚ (٧٥)
اُدۡخُلُوۡۤا اَبۡوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ۚ فَبِئۡسَ مَثۡوَى الۡمُتَكَبِّرِيۡنَ (٧٦) فَاصۡبِرۡ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ
بَعۡضَ الَّذِىۡ نَعِدُهُمۡ اَوۡ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيۡنَا يُرۡجَعُوۡنَ (٧٧) وَ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا رُسُلًا مِّنۡ قَبۡلِكَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ قَصَصۡنَا
عَلَيۡكَ وَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ لَّمۡ نَقۡصُصۡ عَلَيۡكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوۡلٍ اَنۡ يَّاۡتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمۡرُ اللّٰهِ
قُضِىَ بِالۡحَـقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ۚ (٧٨)

आयत नं० 69 से 78

**क्या आपने उन लोगों** (की हालत) **को नहीं देखा जो अल्लाह तआ़ला की आयतों में झगड़े निकालते हैं,** (हक़ से) **कहां फिरे चले जा रहे हैं(69) जिन लोगों ने इस किताब** (यानी कुरआन) **को झुटलाया और उस चीज़ को भी** (झुटलाया) **जो हम ने अपने पैग़म्बरों को देकर भेजा था** (इसमें किताबें और हुक्म और मोजिज़े सब आगये क्योंकि अरब के मुशरिक और किसी पैग़म्बर को भी नहीं मानते थे) **सो उनको अभी** (यानी क़ियामत में कि नज़दीक है) **पता लग जाएगा(70) जब कि पट्टे उनकी गर्दनों में होंगे और** (उन पट्टों में बन्धी होंगी) **जंजीरें,** (और उन ज़ंजीरों से) **उन को घसीटा जाएगा(71) खौलते हुए** (गर्म) **पानी में, फिर ये आग में झोंक दिये जाएंगे(72) फिर उनसे पूछा जाएगा वो कहा गये दूसरे माबूद(73)** (जिन को तुम पूजा करते थे) **अल्लाह के सिवा** (यानी वो तुम्हारी मदद क्यों नहीं करते)**, वो कहेंगे कि वो सब ग़ाइब हो गये बल्कि** (सच बात तो यह है कि) **हम इससे पहले** (दुनिया में जो बुतों को पूजते थे तो अब पता चला कि) **किसी को भी नहीं पूजते** (थे यानी मालूम हुआ कि वो कोई चीज़ नहीं) **थे,** (आगे अल्लाह तआ़ला बताते हैं कि) **अल्लाह तआ़ला इसी तरह काफ़िरों को ग़लती में फ़ंसाए रखते** (हैं कि जिस चीज़ के न होने का वहां इक़रार करेंगे आज यहां उनकी इबादत में लगे) **हैं(74)** (आगे कहा जाएगा कि) **यह** (सज़ा) **उसके बदले में है कि तुम दुनिया में नाहक़ ख़ुशियां मनाते थे और उसके बदले में है कि तुम इतराते थे(75)** (और इससे पहले उनको हुक्म होगा कि) **जहन्नम के दरवाज़ों में सदा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ,** (क्योंकि अल्ला की आयतों से) **घमन्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है(76) बस** (जब उन से इस तरह बदला लिया जाएगा तो) **आप** (थोड़ा) **सब्र कीजिए बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर जिस** (अज़ाब) **का हम उन से वादा कर रहे हैं** (कि कुफ़्र का नतीजा अज़ाब है) **उसमें कुछ थोड़ा सा** (अज़ाब) **अगर हम आप को दिखादें** (यानी आप की ज़िन्दगी में उन पर अज़ाब आजाए) **या** (उसके आने से पहले ही) **हम आप को उठालें** (फिर चाहे बाद में अज़ाब आए या न आए) **सो** (हर हालत में) **हमारे ही पास उन को आना** (होगा और उस वक़्त ज़रूर उन पर अज़ाब) **होगा (77) और** (इस बात को याद करके भी तसल्ली पाइये कि) **हम ने आप से पहले बहुत से पैग़म्बर भेजे जिन में कुछ तो वो हैं जिन का हम ने आप से बयान किया और कुछ वो हैं जिन का हमने आप से बयान नहीं किया, और** (इतनी बात सब में एक है कि) **किसी पैग़म्बर से यह न हो सका कि कोई मोजिज़ा बिना अल्लाह की इजाज़त के ले आए** (और उम्मत की हर मांग पूरी कर सके सो कुछ इसलिए भी

उनको झुटलाते रहे, इसी तरह ये लोग आप को झुटलाते हैं तो आप तसल्ली रखिये और सब्र कीजिए), **फिर जिस वक़्त अल्लाह का हुक्म** (अज़ाब के लिए) **आएगा** (चाहे दुनिया में या आख़रत में) **ठीक-ठीक** (खुला) **फ़ैसला हो जाएगा और उस वक़्त झूट पर चलने वाले नुक़सान में रह जाएंगे**(78)

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَ لَكُمْ فِیْهَا مَنَافِعُ وَ لِتَبْلُغُوْا عَلَیْهَا
حَاجَةً فِیْ صُدُوْرِكُمْ وَ عَلَیْهَا وَ عَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَ یُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ ۖ فَاَیَّ اٰیٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾ اَفَلَمْ
یَسِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَیَنْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَ اَشَدَّ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا
فِی الْاَرْضِ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ
الْعِلْمِ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَ كَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ
مُشْرِكِیْنَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ یَكُ یَنْفَعُهُمْ اِیْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ فِیْ عِبَادِهٖ ۚ وَ خَسِرَ
هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

आयत नं० 79 से 85

**अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए जानवर बनाए ताकि उनमें कुछ पर सवारी करो और उनमें कुछ** (ऐसे हैं कि उन को) **खाते भी हो**(79) **और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत से फ़ाइदे हैं** (कि उनके बाल और ऊन काम आती है) **और** (इसलिए बनाए) **ताकि तुम उन पर** (सवार होकर) **अपने मतलब** (की जगह) **तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में है** (जैसे किसी से मिलने के लिए जाना कारोबार के लिए जाना) **और** (सवार होने में कुछ उनही की ख़ास बात नहीं बल्कि) **उन पर** (भी) **और कशती पर** (भी) **सवार होते हो**(80) **और** (इनके सिवा) **तुम को अपनी** (कुदरत की) **और निशानियां दिखाता रहता** (है जैसा कि हर बनाई हुई चीज़ उस की कुदरत की एक निशानी) **है फिर तुम अल्लाह की कौन-कौन सी निशानियों का इनकार करोगे**(81) (और ये लोग जो सबूतों के बाद भी तौहीद का इनकार करते हैं तो क्या इन को शिर्क के अन्जाम की ख़बर नहीं और) **क्या इन लोगों ने मुल्क में चल फिर कर नहीं देखा कि जो** (मुशरिक) **लोग इनसे पहले हो चुके हैं** (इस शिर्क की वजह से) **उन का कैसा अन्जाम हुआ,** (हालांकि) **वो लोग इन से**

(गिनती में भी) **ज़्यादा थे और बढ़े हुए थे ताक़त और यादगारों में** (भी) **जो कि ज़मीन में छोड़ गये हैं** (जैसे इमारतें) **सो उन की** (यह सब) **कमाई उनके कुछ काम न आई** (और अल्लाह के अज़ाब से बच न सके)(82) **बस जब उन के पैग़म्बर उन के पास खुली दलीलें लेकर आए तो वो लोग अपने** (उस रोज़गारी) **इल्म पर इतराने लगे जो उनके पास था** (यानी रोज़गार को असल समझा और उसकी जानकारी पर ख़ुश हुए और आख़रत के इल्म की हंसी उड़ाई) **और** (इसके नतीजे में) **उन पर वो अज़ाब आपड़ा जिसकी हंसी उड़ाते थे**(83) **फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा तो कहने लगे** (अब) **हम अल्लाह अकेले पर ईमान लाए और उन सब चीज़ों का इनकार कर दिया जिन को हम उसके साथ साझी ठहराते थे**(84) **लेकिन जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो उनके ईमान लाने से फ़ाइदा नहीं हुआ** (क्योंकि वो ईमान लाना मजबूरी का है और बन्दे का ईमान आज़ादी और मर्ज़ी से होना चाहिए)**, अल्लाह तआ़ला ने अपना ये ही दस्तूर बनाया हुआ है जो उसके बन्दों में पहले से होता चला आया है और उस वक़्त** (यानी जब कि ईमान का नफ़ा न हुआ) **काफ़िर नुक़सान में रह गये** (बस इन मुशरिकों को भी यह समझ कर डरना चाहिए उनके लिए भी ये ही होगा फिर बिगड़ी बात न बन सकेगी)(85)

**नोटः-** एक हदीस में है कि "अल्लाह तआ़ला बन्दे की तौबा उस वक़्त से पहले-पहले क़ुबूल करते हैं जिस वक़्त तक मौत का ग़रगरा न आजाए (यानी मौत की निशानी सामने आजाए)"। इसी तरह आसमानी अज़ाब सामने आजाने के बाद किसी की तौबा और ईमान क़ुबूल नहीं होता।

(इब्ने कसीर)

# 41-सूरत-हामीम सजदा

**इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '54' आयतें हैं**

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

**शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है**

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ تَنۡزِیۡلٌ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۚ﴿۲﴾ کِتٰبٌ فُصِّلَتۡ اٰیٰتُہٗ قُرۡاٰنًا عَرَبِیًّا لِّقَوۡمٍ یَّعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ بَشِیۡرًا وَّ نَذِیۡرًا ۚ
فَاَعۡرَضَ اَکۡثَرُہُمۡ فَہُمۡ لَا یَسۡمَعُوۡنَ ﴿۴﴾ وَ قَالُوۡا قُلُوۡبُنَا فِیۡۤ اَکِنَّۃٍ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ اِلَیۡہِ وَ فِیۡۤ اٰذَانِنَا وَقۡرٌ وَّ مِنۡۢ
بَیۡنِنَا وَ بَیۡنِکَ حِجَابٌ فَاعۡمَلۡ اِنَّنَا عٰمِلُوۡنَ ﴿۵﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ یُوۡحٰۤی اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰـہُکُمۡ اِلٰہٌ وَّاحِدٌ
فَاسۡتَقِیۡمُوۡۤا اِلَیۡہِ وَ اسۡتَغۡفِرُوۡہُ ؕ وَ وَیۡلٌ لِّلۡمُشۡرِکِیۡنَ ۙ﴿۶﴾ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡتُوۡنَ الزَّکٰوۃَ وَ ہُمۡ بِالۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ کٰفِرُوۡنَ ﴿۷﴾
اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَہُمۡ اَجۡرٌ غَیۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ٪﴿۸﴾

आयत नं० 01 से 08

**हामीम** (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **यह कलाम बड़े महरबान बहुत रहम वाले** (अल्लाह) **की तरफ़ से उतारा हुआ है(02) यह** (कलाम) **एक किताब है जिसकी आयतें साफ़- साफ़ बयान की गई हैं यानी ऐसा कुरआन है जो अरबी** (ज़बान में है ताकि अरब के लोग आसानी से समझ लें क्योंकि पहले उन को ही समझना) **है** (और) **ऐसे लोगों के लिए** (नफ़ा देने वाला है) **जो समझदार** (हैं यानी हुक्म तो सब के लिए हैं मगर उनसे नफ़ा वो ही लोग उठाते हैं जो समझबूझ रखते) **हैं(03)** (कुरआन मानने वालों को) **ख़ुशख़बरी देने वाला है और** (न मानने वालों को अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला सो** (चाहिए तो यह था कि सभी इस पर ईमान लाते मगर) **अक्सर लोगों ने** (इससे) **मुंह मोड़ रक्खा है फिर वो सुनते ही नहीं(04) और** (जब आप उनको सुनाते हैं तो) **वो लोग कहते हैं कि जिस बात की तरफ़ आप हम को बुलाते हैं हमारे दिल उससे पर्दों में हैं** (यानी आप की बात हमारी समझ में नहीं आती) **और हमारे कानों में डाट** (लगी) **है और हमारे और आप के बीच में एक पर्दा है इसलिए आप अपना काम किये जाइये हम अपना काम कर रहे** (हैं यानी हम से मानने की उम्मीद न रखिये हम अपने तरीक़े को छोड़ने

वाले नहीं) **हैं**(05) (ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि** (तुम्हें ईमान पर मजबूर कर देना तो मेरे बस की बात नहीं, क्योंकि) **मैं भी तुम ही जैसा इन्सान हूं** (ख़ुदा नहीं जो दिलों को बदल सकूं लेकिन फ़र्क़ यह है कि) **मुझ पर यह वही उतरती है कि तुम्हारा माबूद एक ही** (है और यह वही ऐसी है कि हर आदमी सोचे तो इसका सही होना उसकी समझ में आ सकता) **है** (और जबकि मेरी पैग़म्बरी और वही मोजिज़ों से साबित हो चुकी तो मेरी बात मानना सब पर फ़र्ज़ है) **इसलिए उस** (सच्चे माबूद) **की तरफ़ सीध बान्ध लो** (यानी उसके सिवा किसी की इबादत की तरफ़ ध्यान न करो) **और उससे मुआफ़ी** (मांगो यानी पहले शिर्क के कामों से तौबा करो और अपनी ग़लती की मुआफ़ी) **मांगो, और** (ऐसे) **मुशरिकों के लिए बड़ी ख़राबी है**(06) **जो** (पैग़म्बरी की दलीलों के देखने और तौहीद की दलीलों को सुनने के बावजूद अपने ग़लत तरीक़े को नहीं छोड़ते और) **ज़कात नहीं देते और वो आख़रत का इनकार ही करते रहते हैं**(07) (और इसके उलट) **जो लोग ईमान ले आए और उन्होंने नेक काम किये उनके लिए** (आख़रत में) **ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म नहीं होगा**(08)

**नोटः**- मोमिन जिन नेक कामों का आदी होता है अगर किसी बीमारी या सफ़र या किसी मजबूरी से किसी वक़्त वो नेक काम छूट भी जाए तो भी उस का सवाब रोका नहीं जाता बल्कि अल्लाह तआला फ़रिशतों को हुक्म देते हैं कि मेरा बन्दा जो नेक काम अपनी तन्दरूस्ती और फ़ुर्सत के वक़्त में पाबन्दी से किया करता था उसकी मजबूरी की हालत में भी वो नेक काम उसके किये बिना भी उसके आमाल नामे में लिखे जाते रहें। ''लहुम अजरून ग़ैरू ममनून''। (मज़हरी)

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ
فِيهَا رَوَاسِيَ مِن فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۚ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوَىٰ
إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۚ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾ فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ
سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ
الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

आयत नं० 09 से 12

**आप** (उन लोगों से) **कह दीजिए कि क्या तुम लोग ऐसे अल्लाह का इनकार करते हो जिसने ज़मीन को** (इतनी बड़ी होने के बावजूद) **दो दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा कर दिया और**

**तुम** (दूसरों को इबादत में) **उसके साझी बनाते हो, वो** (अल्लाह जिस की कुदरत ऐसी है) **सारे जहानों का रब है(09) और उसने ज़मीन में उसके ऊपर उभरे हुए पहाड़ बना दिये और उस** (ज़मीन) **में फ़ाइदे की चीज़ें रख दीं** (जैसे खेती और जानवर) **और उस** (ज़मीन) **में उस** (के रहने वालों) **की ख़ुराकें बनाईं** (कि हर इलाक़े के लोगों के लिए उनके हिसाब से चीज़ें पैदा की यह सब) **चार दिन में** (हुआ दो दिन में ज़मीन दो दिन पहाड़ जो गिनती में) **पूरे हैं, पूछने वालों के लिए** (यानी उन लोगों के लिए जो दुनिया के पैदा होने के बारे में पूछते हैं)(10) **फिर** (ये सब कुछ पैदा करके) **आसमान** (के बनाने) **की तरफ़ ध्यान किया और वो उस वक़्त धुंआ सा था सो उससे और ज़मीन से कहा कि तुम दोनों** (को हमारा हुक्म मानने की तरफ़ आना तो ज़रूर पड़ेगा अब तुम चाहे) **ख़ुशी से आओ या ज़बरदस्ती से, दोनो ने कहा कि हम ख़ुशी से** (उन हुक्मों के लिए) **हाज़िर हैं(11) सो दो दिन में उसके सात आसमान बना दिये और** (क्योंकि सातों आसमानों को फ़रिशतों से आबाद कर दिया गया था इसलिए) **हर आसमान में उस के मुनासिब अपना हुक्म** (फ़रिशतों को) **भेज दिया** (यानी जिन फ़रिशतों से जो काम लेना था वो उनको बता दिया)**, और हम ने इस नज़दीक वाले आसमान को सितारों से सजाया और** (शैतानों को आसमानी ख़बरें चोरी करने से रोकने के लिए) **उसकी हिफ़ाज़त की, यह तय किया हुआ है** (अल्लाह) **ज़बरदस्त** (कुदरत वाले) **ख़बरदार का**(12)

**नोटः-** ज़मीन व आसमान ने कहा कि हम ख़ुशी से हाज़िर हैं। ज़मीन की तरफ़ से यह जवाब ज़मीन के उस हिस्से ने दिया था जिस पर बैतुल्लाह (ख़ाना काबा) की तामीर हुई। और आसमान के हिस्से ने जो बैतुल्लाह के ऊपर आसमान में है जिस को बैतुल मामूर (एहले आसमान का काबा) कहा जाता है। (इब्ने कसीर)

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَ
مِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ
فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ قَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ
مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَ هُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَ اَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ

فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ نَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ وَ يَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ
سَمْعُهُمْ وَ اَبْصَارُهُمْ وَ جُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَ قَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا
اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّ هُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ
عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ لَآ اَبْصَارُكُمْ وَ لَا جُلُوْدُكُمْ وَ لٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَ ذٰلِكُمْ
ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ
يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَ قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ حَقَّ
عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

आयत नं० 13 से 25

**फिर** (तौहीद की दलीलें सुन कर भी) **अगर ये लोग** (तौहीद से) **मुंह फेरते हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तुम को ऐसे सख़्त अज़ाब से डराता हूं जैसा आद व समूद पर** (शिर्क व कुफ़्र की वजह से) **अज़ाब आया था(13)** (और उन का क़िस्सा उस वक़्त हुआ था) **जबकि** (उन को समझाने के लिए) **उन के पास उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी पैग़म्बर आए** (यानी उनको समझाने की हर तरह कोशिश की गई और उन पैग़म्बरों ने ये ही कहा) **कि सिवाए अल्लाह के और किसी की इबादत न करो, उन्होंने जवाब दिया कि** (तुम जो अल्लाह की तरफ़ से आने का और तौहीद की तरफ़ बुलाने का दावा करते हो ये ही ग़लत है क्योंकि) **अगर हमारा रब चाहता** (कि किसी को पैग़म्बन बनाकर भेजे) **तो फ़रिशतों को भेजता इसलिए हम उस** (तौहीद) **का** (भी) **इनकार करते हैं जिस को देकर** (तुम्हारे दावे से) **तुम** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजे गये हो(14) फिर आद** (का क़िस्सा तो यह हुआ वो लोग) **दुनिया में नाहक़ घमन्ड करने लगे और** (जब अज़ाब की बात सुनी तो) **कहने लगे वो कौन है जो ताक़त में हम से ज़्यादा है** (कि वो हमें ऐसे अज़ाब में पकड़े और हम उसे दूर न कर सकें, आगे जवाब है कि) **क्या उन लोगों को यह नज़र न आया कि जिस अल्लाह ने उन को पैदा किया है वो ताक़त में उन से बहुत ज़्यादा है,** (मगर इसके बावजूद भी वो ईमान न लाए) **और हमारी आयतों का इनकार करते रहे(15) तो हम ने उन पर एक तेज़ आंधी ऐसे दिनों में भेजी जो** (अज़ाब आने की वजह से उनके हक़ में) **मनहूस थे ताकि हम उन**

**को इस दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई के अज़ाब का मज़ा चखा दें, और आख़रत का अज़ाब और भी ज़्यादा रूसवा करने वाला है और** (उस अज़ाब के वक़्त किसी तरफ़ से भी) **उन को मदद न पहुंचेगी(16) और वो जो समूद थे तो** (उनकी हालत यह हुई कि) **हमने उन को** (पैग़म्बर के वास्ते से) **सीधा रास्ता बताया उन्होंने गुमराही को हिदायत के मुक़ाबिले में पसन्द किया तो उन को रूसवाई के अज़ाब की आफ़त ने पकड़ लिया उनके बुरे कामों की वजह से(17) और हमने** (उस अज़ाब से) **उन लोगों को बचा दिया जो ईमान लाए और हम से डरते थे(18) और** (आगे आख़रत के अज़ाब का ज़िक्र है कि उन को वो दिन भी याद दिलाइये) **जिस दिन अल्लाह के दुशमन** (यानी काफ़िर लोग) **दोज़ख़ की तरफ़ जमा कर**(ने) **के**(लिए हिसाब की जगह) **लाए जाएंगे फिर** (ज़्यादा होने की वजह से) **वो रोके जाएंगे** (ताकि पीछे रहने वाले साथ हो जाएं)**(19) यहां तक कि जब वो** (सब जमा होकर) **उस** (दोज़ख़) **के पास पहुंच जाएंगे** (यानी हिसाब की जगह जहां से दोज़ख़ पास ही नज़र आएगी और हिसाब शुरू होगा) **तो उनके कान और आंखें और उनकी खालें उनके ख़िलाफ़ उनके कामों की गवाही देंगे(20) और** (इस वक़्त) **वो लोग** (हैरानी से) **अपने जिस्म के हिस्सों से कहेंगे कि तुम ने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी** (हम तो दुनिया में सब कुछ तुम्हारे ही आराम के लिए करते थे)**, वो** (हिस्से) **जवाब देंगे हम को उस** (कुदरत वाले ने) **बोलने की ताक़त दी और उसी ने तुम को पहली बार पैदा किया था और उसी के पास फिर** (दोबारा ज़िन्दा करके) **लाए गये हो** (तो हम ऐसे बड़े और कुदरत वाले के पूछने पर हक़ बात कैसे छुपा सकते थे इसलिए गवाही देदी)**(21) और** (आगे अल्लाह तआला काफ़िरों को कहेंगे कि) **तुम** (दुनिया में) **इस बात से तो अपने को** (किसी तरह) **छुपा** (और बचा) **ही न सकते थे कि तुम्हारे कान और आंखे और खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें लेकिन तुम** (इसलिए बुराई से न बचे कि) **इस गुमान में रहे कि अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे बहुत से कामों की ख़बर भी नहीं(22) और तुम्हारे इसी गुमान ने जो कि तुम ने अपने रब के साथ किया था तुम को बर्बाद किया** (क्योंकि इस गुमान से कुफ़्र के काम किये जिसकी वजह से बर्बाद हुए) **फिर तुम** (सदा के) **नुक़सान में पड़ गये(23) सो** (इस हालत में) **अगर ये लोग** (उस बर्बादी व नुक़सान पर) **सब्र करें** (यानी शिकायत न करें) **तब भी दोज़ख़ ही उन का ठिकाना है** (यह नहीं कि सब्र पर रहम हो जाए जैसा कि दुनिया में अक्सर ऐसा हो जाता था) **और अगर वो मजबूरी बताना चाहेंगे तो भी कुबूल न होगी(24) और हम ने** (दुनिया में) **उन** (काफ़िरों) **के लिए कुछ साथ रहने वाले** (शैतान) **लगा दिये थे सो उन्होंने उनके अगले पिछले कामों को उन की नज़र में सजा रक्खा था** (इसलिए

उनको करते थे) **और** (कुफ़्र पर जमे रहने की वजह से) **उन के हक़ में भी उन लोगों के साथ अल्लाह की बात** (यानी अज़ाब का वादा) **पूरा होकर रहा जो इनसे पहले जिन्नात और इन्सान** (काफ़िर) **हुए हैं, बेशक वो भी नुक़सान में रहे**(25)

**नोटः-** हदीसों से साबित है कि कोई दिन या रात अपने आप में मनहूस नहीं है क़ौमे आद पर आने वाले तूफ़ान के दिनों को मनहूस कहने का मतलब यह है कि ये दिन उस क़ौम के हक़ में उनके बुरे कामों की वजह से मनहूस हो गये थे इस का यह मतलब नहीं कि ये दिन सब के लिए मनहूस हों। (बयानुल क़ुरआन)

**हदीसः-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ''आने वाला दिन इन्सान को यह आवाज़ देता है कि मैं नया दिन हूं और जो कुछ तू मेरे अन्दर अमल करेगा मैं क़ियामत में उस पर गवाही दूंगा। इसलिए तुझे चाहिए कि मेरे ख़त्म होने से पहले-पहले कोई नेकी करे कि मैं उसकी गवाही दूं। और अगर मैं चला गया तो फिर तू मुझे कभी न पाएगा''। इसी तरह हर रात इन्सान को ये ही आवाज़ देती है। (क़ुरतबी)

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ الْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۞ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا
شَدِيْدًا ۙ وَّ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۞ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ؕ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۞ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ
نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۞

आयत नं० 26 से 29

**और ये काफ़िर** (आपस में) **यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को सुनो ही नहीं और** (अगर पैग़म्बर सुनाने भी लगें तो) **उसके बीच में शोर मचा दिया करो शायद** (इस चाल से) **तुम ही हावी रहो** (और पैग़म्बर हार कर चुप हो जाएं)(26) **तो** (उन के इस नापाक इरादे के बदले में) **हम उन काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे और उन को उनके बुरे-बुरे कामों की सज़ा देंगे**(27) **ये ही सज़ा है अल्लाह के दुशमनों की यानी दोज़ख़, उनके लिए वहां सदा रहने का**

**घर होगा, इस बात के बदले में कि वो हमारी आयतों का इनकार किया करते थे**(28) **और** (जब अज़ाब में गरिफ़्तार होंगे तो) **वो काफ़िर कहेंगे या रब हमारे हम को वो दोनों शैतान और इन्सान दिखा दीजिए जिन्होंने हम को गुमराह किया था हम उन को अपने पैरों के नीचे रोन्द डालें ताकि वो ख़ूब रूसवा** (हों यानी उनको उस वक़्त उन लोगों पर गुस्सा आएगा जिन्होंने उनको दुनिया में बहकाया था आदमी भी और शैतान भी चाहे एक-एक हों या बहुत से) **हों** (और यूं तो ये गुमराह करने वाले भी जहन्नम में ही होंगे मगर उस बातचीत के वक़्त वो उनके सामने नहीं होंगे)(29)

**नोटः-** ऊपर आयत से पता चला कि क़ुरआन की तिलावत में रूकावट डालने की नीयत से शोर करना तो कुफ़्र की निशानी है इससे ये भी पता चला कि चुप होकर सुनना वाजिब और ईमान की निशानी है।

**मसअलाः-** जहां लोग अपने काम धन्दों में लगे हों और क़ुरआन की तरफ़ कोई ध्यान न दे रहे हों वहां क़ुरआन सुनाना ठीक नहीं जैसा कि आजकल होटलो बाज़ारों और गाड़ियों में होता है कि टेप रिकार्ड चला देते हैं क़ुरआन की तिलावत हो रही है और सुनता कोई नहीं।

(मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ
الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَ
لَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَ
قَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَ
بَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۖ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾ وَإِمَّا
يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

आयत नं० 30 से 36

**जिन लोगों ने** (दिल से) **इक़रार कर लिया कि हमारा** (सच्चा) **रब** (सिर्फ़) **अल्लाह है** (मतलब यह है कि शिर्क छोड़ कर तौहीद अपनाई) **फिर** (उस पर) **जमे रहे** (यानी उस को छोड़ा

नहीं) **उन पर** (अल्लाह की तरफ़ से रहमत व ख़ुशख़बरी के) **फ़रिशते उतरेंगे** (पहले मौत के वक़्त फिर क़ब्र में फिर क़ियामत में और कहेंगे) **कि तुम न** (आख़रत की हालतों से) **डरो और न** (दुनिया के छोड़ने पर) **ग़म करो** (क्योंकि आगे तुम्हारे लिए इसका अच्छा बदला और अमन चैन है) **और तुम जन्नत** (के मिलने) **पर ख़ुश रहो जिसका तुम से वादा किया जाया करता था(30) हम तुम्हारे साथी थे दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़रत में भी रहेंगे** (दुनिया में फ़रिशतों का साथी होना यह है कि वो इन्सान के दिल में नेक कामों की बात डालते थे और मुसीबत के वक़्त सब्र व तसल्ली फ़रिशतों के साथ का असर होता है और आख़रत में साथी होना तो आमने सामने खुलकर होगा)**, और तुम्हारे लिए इस** (जन्नत) **में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है और ऐसे ही तुम्हारे लिए उसमें जो मांगोगे मौजूद है** (यानी जो कुछ ज़बान से मांगोगे वो तो मिलेगा ही बल्कि मांगने की भी ज़रूरत न होगी जिस चीज़ को तुम्हारा दिल चाहेगा मौजूद हो जाएगी)(31) **यह महमानी होगी बख़्शने वाले महरबान की तरफ़ से** (यानी ये नेमतें इज़्ज़त के साथ इस तरह मिलेंगी जिस तरह महमानों को मिलती हैं)(32) **और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो** (लोगों को) **अल्लाह की तरफ़ बुलाए और** (ख़ुद भी) **नेक काम करे और** (यह भी) **कहे कि मैं ताबेदारों में से हूं** (यानी बन्दगी को अपनी इज़्ज़त समझे घमन्डियों की तरह इससे शर्म न करे)(33) **और** (चूंकि दीन की दावत और लोगों के सुधार का इरादा करने वालों को अक्सर जाहिलों की तरफ़ से तकलीफ़ों का सामना होता है इसलिए आगे उन को ज़ुल्म के मुक़ाबिले में इन्साफ़ और बुराई के बदले में भलाई करने की नसीहत की जाती है कि) **भलाई और बुराई बराबर नहीं होती** (है बलिक हर एक का असर अलग-अलग) **है,** (तो) **आप नेक बरताव से** (बुराई का) **बदला दीजिए फिर यकायक** (आप देखेंगे कि) **आप में और जिस आदमी में दुशमनी थी वो ऐसा हो जाएगा जैसा कोई दिली दोस्त होता** (है यानी बुराई का बदला बुराई से देने में तो दुशमनी बढ़ती है और भलाई करने से दुशमनी अक्सर घटती) **है(34) और यह बात उन्हीं लोगों को नसीब होती है जो सब्र से काम लेते हैं और यह बात उसी को मिलती है जो बड़े नसीब वाला है(35) और अगर** (ऐसे वक़्त में) **आप को शैतान की तरफ़ से** (ग़ुस्से का) **कुछ वसवसा आने लगे तो** (फ़ौरन) **अल्लाह से पनाह मांग लिया कीजिए, बेशक वो ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है(35)**

**नोटः-** एक हदीस में है कि अज़ान और तकबीर के बीच में जो दुआ की जाती है वो रद्द नहीं होती (यानी ज़रूर क़ुबूल होती है) । (मज़हरी)

एक रिवायत में है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को किसी ने गाली दी या बुरा कहा तो आप ने उस के जवाब में कहा कि अगर तुम अपने कलाम में सच्चे हो कि मैं मुजरिम ख़तावार और बुरा हूं तो अल्लाह तआ़ला मुझे मुआफ़ कर दे और अगर तुम ने झूट बोला है तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें मुआफ़ कर दे। (क़रतबी)

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ
اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا
یَسْـَٔمُوْنَ ۩ ﴿٣٨﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِیْۤ
اَحْیَاهَا لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٣٩﴾

आयत नं० 37 से 39

**और उसी की** (कुदरत व तौहीद की) **निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चान्द,** (बस) **तुम लोग न सूरज को सजदा करो और न चान्द को और** (सिर्फ़) **उस अल्लाह को सजदा करो जिस ने इन** (सब) **को पैदा किया अगर** (सचमुच) **तुम को अल्लाह की इबादत करनी** (है यानी अगर अल्लाह की इबादत करनी है तो वो सिर्फ़ उसी सूरत में हो सकती है कि उसके साथ किसी दूसरे की इबादत न करो मुशरिकों की तरह अल्लाह की इबादत के साथ दूसरों को इबादत में साझी कर दिया तो फिर वो अल्लाह की इबादत नहीं रहती) **है**(37) **फिर अगर ये लोग** (तौहीद की इबादत अपनाने और अपने बड़ों की रस्म शिर्क को छोड़ने से शर्म और) **घमन्ड करें तो** (उनकी नासमझी है क्योंकि) **जो फ़रिशते आप के रब के पास हैं वो रात दिन उसकी तस्बीह करते हैं और वो** (इससे ज़रा) **नहीं उकताते** (जब अल्लाह के नज़दीकी फ़रिशते जो उन लोगों से लाखो गुना इज़्ज़तदार हैं उन को शर्म नहीं तो इन बेवकूफ़ों को शर्म करने का क्या मौक़ा है)(38) **और उसकी** (कुदरत व तौहीद की) **निशानियों में से एक यह है कि तुम ज़मीन को देखते हो कि मुरझाई पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो उभरती और फूलती है,** (तो इससे साबित हुआ कि) **जिसने ज़मीन को** (उसके मुनासिब) **ज़िन्दा कर दिया वो ही मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा, बेशक वो हर चीज़ पर कुदरत रखता है**(39)

**नोटः**- इबादत की नीयत से अल्लाह के सिवा किसी को भी सजदा करना कुफ़्र व शिर्क है जो कभी भी किसी भी शरीअत में जाइज़ नहीं रहा। और इज़्ज़त व इकराम की नीयत से किसी इन्सान को सजदा करना पहली शरीअतों में जाइज़ था जैसा कि हज़रत यूसुफ़ अलैकिहस्सलाम के क़िस्से में आता है मगर हमारी शरीअत में यह हुक्म बदल दिया गया और अल्लाह के सिवा किसी को सजदा करना हराम है।

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۗ أَفَمَن يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ
اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۙ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾
لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾ مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ
قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوا لَوْلَا
فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ
وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾ مَّنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ
أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

आयत नं० 40 से 46

**बेशक जो लोग हमारी आयतों के बारे में टेढ़ा रास्ता अपनाते हैं** (यानी हमारी आयतों पर ईमान लाने और अमल करने के बजाए उनको झुटलाते हैं) **वो लोग हम से छुप नहीं सकते** (उनको हम जहन्नम का अज़ाब देंगे)**, सो भला जो आदमी जहन्नम में डाला जाए** (जैसे काफ़िर) **वो अच्छा है या वो आदमी जो क़ियामत के दिन अमन चैन के साथ** (जन्नत में) **आए,** (आगे उनको डराने के लिए कहा जाता है कि) **जो जी चाहे** (ख़ूब) **कर लो वो तुम्हारा सब कुछ किया हुआ देख रहा है** (एक बार ही सज़ा देगा)(40) **जो लोग इस क़ुरआन का जबकि वो उनके पास पहुंचता है इनकार करते हैं** (उनमें समझ की कमी है) **और** (इस क़ुरआन में कोई कमी नहीं क्योंकि) **यह** (क़ुरआन) **बड़ी इज़्ज़त वाली किताब है(41) जिसमें झूट बात न उसके सामने से आ सकती है और न उसके पीछे से** (यानी यह सब का सब अल्लाह का उतारा हुआ है इसमें कोई

झूट बात मिलाई नहीं जा सकती), **यह उस** (अल्लाह) **की तरफ़ से उतारा हुआ है जो हिकमतों वाला सब तारीफ़ों वाला है**(42) (ऐ पैग़म्बर) **आप को वो ही बातें** (झुटलाने व सताने की) **कही जाती हैं जो आप से पहले पैग़म्बरों को कही गई हैं** (उन्होंने सब्र किया था आप भी सब्र कीजिए, और इससे भी तसल्ली पाइये कि) **आप का रब बड़ा बख़्शने वाला और दर्दनाक सज़ा देने वाला है** (बस अगर ये मुख़ालिफ़ बाज़ आकर तौबा करें तो मुआफ़ी वर्ना इनको सज़ा दूंगा फिर आप किसलिए परीशान हों)(43) **और** (ये लोग एक शक यह करते हैं कि कुरआन का कुछ हिस्सा अजमी यानी अरबी के सिवा दूसरी ज़बान में भी होना चाहिए था तो बात यह है कि) **अगर हम इस को** (कुछ या सारा) **अजमी** (ज़बान का) **कुरआन बनाते** (तो भी ये उसको न मानते बल्कि उस पर भी ऐतराज़ करते और) **यह कहते कि इस की आयतें** (इस तरह) **साफ़-साफ़ क्यों नहीं बयान की गईं** (कि हम समझ लेते यानी अरबी में क्यों नहीं आया, और यह कहते कि) **यह क्या बात है कि अजमी किताब और पैग़म्बर अरबी** (है यानी हर तरह ऐतराज़ करना) **है,** (ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि यह कुरआन ईमान वालों के लिए तो** (नेक कामों का) **रास्ता दिखाने वाला है और** (बुरे कामों से जो रोग दिलों में पैदा हो जाते हैं जब इस कुरआन के हुक्मों पर चला जाए तो यह उन रोगों से) **शिफ़ा है, और जो लोग** (सच्चाई जानने के बावजूद हटधर्मी से) **ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है** (जिससे हक़ को इन्साफ़ से नहीं सुनते) **और** (इसी कमी की वजह से) **वो कुरआन उनके हक़ में नाबीनाई** (है यानी अन्धेरों में भटकने का सामान है जैसे सूरज से दुनिया की रौशनी मिलती है लेकिन चमगादड़ को अन्धा कर देता) **है,** (और) **ये लोग** (हक़ बात सुनने के बावजूद नफ़ा न उठाने की वजह से ऐसे हैं जैसे) **किसी दूर जगह से पुकारे जा रहे** (हों कि आवाज़ सुनते हों मगर समझते न) **हों**(44) **और** (इसी तरह) **हम ने मूसा को भी किताब दी थी सो उसमें भी फूट पड़ी** (यानी किसी ने माना किसी ने न माना यह कोई नई बात आप के लिए नहीं हुई बस आप ग़म न करें), **और** (ये इनकार करने वाले अज़ाब के ऐसे हक़दार हैं कि) **अगर एक बात आप के रब की तरफ़ से पहले ही से तय न हो चुकी होती** (कि पूरा अज़ाब इन को आख़िरत में दूंगा) **तो उन का** (साफ़) **फ़ैसला** (दुनिया ही में) **हो चुका होता, और ये लोग** (दलीलों के बावजूद) **अभी तक उस** (फ़ैसले यानी आने वाले अज़ाब) **की तरफ़ से ऐसे शक में** (पड़े) **हैं जिसने उन को उलझन में डाल रक्खा है** (कि उनको अज़ाब का यक़ीन ही नहीं आता)(45) **जो आदमी नेक काम करता है वो अपने नफ़े के लिए** (यानी वहां उसका नफ़ा और सवाब पाएगा) **और जो आदमी बुरा काम करता है उस का नुक़सान** (यानी अज़ाब) **उसी पर पड़ेगा, और आप का रब बन्दों**

**पर ज़ुल्म करने वाला नहीं** (कि कोई नेकी, घटा दी जाए या कोई बुराई बढ़ा दी जाए)(46)

**नोटः-** कुफ़्र की एक क़िस्म इलहाद है जिसमें इन्सान क़ुरआन और उसकी आयतों पर ईमान व तस्दीक़ का दावा करे मगर उनके माइने अपनी तरफ़ से ऐसे घड़े जो क़ुरआन व सुन्नत के हुक्मों और आलिमों के ख़िलाफ़ हों और जिससे क़ुरआन का मतलब ही उलट जाए ऐसे काफ़िर को मुलहिद कहते हैं।